

THE
KASHI SANSKRIT SERIES
NO. 117.

(Jyotis'a Section No. 5)

॥ श्रीः ॥

जन्मपत्रदीपकः

सोदाहरणसटिप्पणहिन्दीटीकापरिष्कृतः ।

[परिष्कृतं परिवर्द्धितं द्वितीयं संस्करणम्]



PUBLISHED BY

JAYA KRISHNA DÂS HARI DÂS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office.

BENARES.

1946

वास्तुरत्नावली

सौदाहरण—‘सुबोधिनी’ संस्कृत-हिन्दी टीका तथा
परीक्षोपयोगी विविध परिशिष्ट सहित ।

आज तक इस ग्रन्थ की कोई भी ऐसी सरल टीका नहीं थी जिससे परीक्षार्थी विद्यार्थी सुलभता पूर्वक इस ग्रन्थ का आशय समझ सकें । अतः इस अभिनव संस्करण में अवतरणों के साथ २ प्रत्येक श्लोकों की परीक्षोपयोगी उदाहरण सहित संस्कृत हिन्दी टीका, नाना चक्र और अन्त में वास्तुपूजाविधि, गृहप्रवेशविधि, गृहोपरि गृहादिपतनशान्तिविधि आदि अनेक परिशिष्ट दिये गये हैं । १॥)

लोमशसंहितोक्त—भृगुसंहितोक्त—

भावफलाध्यायः

‘सुबोधिनी’—‘विमला’ भाषाटीका सहितः ।

* वर्तमान युगमें महर्षि लोमश प्रणीत ‘लोमशसंहिता’ तथा महर्षि भृगु प्रणीत ‘भृगुसंहिता’ का कितना यथार्थ फल घटता है; यह बात सर्व विदित है । इन्हीं उपर्युक्त दोनों महान् ग्रन्थों के सार भूत प्रस्तुत “भावफलाध्याय” नामक ग्रन्थ है । आज तक प्रायः इसका विशुद्ध संस्करण अप्राप्य ही था, जन साधारण की सुभीता के लिये महर्षि लोमश प्रणीत ‘भावफलाध्याय’ तथा महर्षि भृगु प्रणीत भावफलाध्याय’ नामक दोनों ग्रन्थ एक ही जिल्द में प्रकाशित कर दिये गये हैं । १)

जातकपारिजातः—(सचित्रः)

‘सुधाशालिनी’ ‘विमला’ संस्कृत-हिन्दी टीकाद्वयोपेतः

परीक्षोपयोगी सरल संस्कृत-हिन्दी टीका, उपपत्ति तथा पदार्थनिर्देशक नाना चित्र-चक्र आदि विविध विषयों से विभूषित सर्व गुणोपेत यह अभिनव सर्वोत्तम बृहत् संस्करण प्रथम बार ही प्रकाशित होकर संस्कृत संसार में उथल-पुथल मचा रहा है । कठिन परिस्थिति के कारण इसकी बहुत कम प्रतियाँ छपी हैं अतः परीक्षार्थी विद्यार्थी शीघ्र मंगा कर लाभ उठावें । ६)

धराचक्रम्

‘सुबोधिनी’ भाषा टीका सहितम् ।

यदि आप रत्नगर्भा भगवती वसुन्धरा के गर्भ से अमूल्य महारत्नों का उपलब्ध करने में रुचि रखते हों तो महर्षि लोमश प्रणीत इस “धराचक्र” नामक ग्रन्थ के प्रस्तुत संस्करण को एक बार अवश्य देखिये । ३)

सूर्यसिद्धान्तः

तत्त्वामृतभाष्योपपत्ति-टिप्पणीभिः सहितः ।

पूर्व प्रकाशित सभी टीकाओं के गुण दोषों की समालोचना करके प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । बड़े बड़े विद्वानोंने उपर्युक्त तत्त्वामृतभाष्य को निरीक्षण करके मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है । सूर्यसिद्धान्त का ऐसा प्रशंसनीय संस्करण यह प्रथम बार ही प्रकाशित हो रहा है शीघ्र प्राप्त होगा ।

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस सिटी ।

THE
KASHI SANSKRIT SERIES
NO. 117.



(Jyautis'a Section No. 5)



S'RĪ
JANMAPATRADĪPAKA

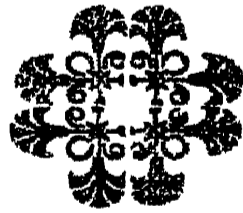
With

HINDI COMMENTARY, EXERCISES
AND NOTES

BY

Jyautishacharya

PT. VINDEYESHWARI PRASADA DVIVEDI
Jyauti'sādhyapaka, Sri Sangaveda Vidyalaya,
(Hanumangarhi, Azamgarh)



PUBLISHED BY
JAYA KRISHNA DAS HARI DAS GUPTA
The Chowkhamba Sanskrit Series Office.
Benares City

1946

॥ श्रीः ॥

काशी-संस्कृत-सीरिज-ग्रन्थमालायाः

११७



(ज्यौतिषविभागे (५) पञ्चमं पुष्पम्)



* श्रीः *

जन्मपत्र-पीपकः

सोदाहरणसटिप्पणहिन्दीटीकापरिष्कृतः ।

आजमगढमण्डलान्तर्गतब्रह्मपुराभिजन-

पं० श्रीधर्मदत्तद्विवेदितनुजनुषा ज्यौतिषाचार्य-

श्रीविन्ध्येर्-पीप सादद्विवेदिना

विरचितः ।

[सपरिष्कृतं परिवर्द्धितं द्वितीयं संस्करणम्]



प्रकाशकः—

जयकृष्णदास—हरिदास गुप्तः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस,

विद्याविलासप्रेस, बनारस सिटी ।

वि० सं० २००३]

मूल्य १।)

[१९४६ ई०

[अस्य ग्रन्थस्य सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः]

❀ प्राक्कथन ❀

यत्पादकञ्जयुगलस्मरणात्खलु शङ्करः ।

सकुटुम्बः समर्थोऽभूच्छङ्कतुं किल तं नुमः ॥

भारत के कोने २ तक जन्मपत्रनिर्माण का प्रचुरप्रचार होते हुए भी ऐसी छोटी कोई पुस्तक नहीं मिलती जिससे थोड़े हि में उसके सारे सार ज्ञात हो जायँ । मानसागरी, होरास्तन, जातकपद्धति प्रभृति पुस्तकें जो आज कल बाज़ारों में अधिकता से उपलब्ध होती हैं, विस्तृतरूप में और दुरुह होने के कारण प्रत्येक पण्डितों का उपकारक नहीं हैं । अतः मैंने अपने कई छात्रों और वैयाकरण मित्रों के बार २ अनुरोध करने पर आजकल साधारणतः जिन २ विषयों का सन्निवेश जन्मपत्रिकाओं में होता है, उन्हीं के बनाने के प्रकारों को यथासाध्य सरलतम पद्यों द्वारा इसमें लिखा है । जिन विषयों में कोई विशेषता नहीं उनको प्राचीनाचार्योक्त पद्यों में ही रख दिया है । प्रत्येक विषयों का भटिति परिज्ञान हो जाने के लिये सोदाहरण सरल हिन्दीटीका और जगह २ पर आवश्यक टिप्पणो भी कर दिया है ।

पुस्तक का आकार बढ़ जाने के भय से फलितभाग का विशेष सन्निवेश इस में नहीं किया गया है । यथासम्भव अवकाश मिलने पर दूसरे भाग के रूप में (यदि प्रथमभाग पण्डितों के हृदय को कुछ भी आकर्षित कर सका तो) उसके प्रकाशन का प्रयत्न किया जायगा ।

इसमें लिखित प्रत्येक विषयों के बारे में किसी प्रकार की खेचतानो नहीं की गई है इसको विज्ञान अपनी सारासारपरिशोक्षितो बुद्धि से पक्षपातविहीन होकर स्वयं विचार करलें ।

अनेन चेत्सज्जनमानसेषु हर्षोद्वमः स्याल्लवमात्रमेव ।

तदाल्पमेघोत्थमपि स्वकीयं परिश्रमं घन्यतमं हि मन्ये ॥

दृग्दोषजा यास्त्रुटयो ममेह याश्चैव सम्मुद्गण्यन्त्रदोषात् ।

तास्तास्समस्ताः स्वधिया सुधीभिः संशोधनीयाः स्वकृपालवेन ॥

शमिति ।

शारदासदन विद्यालयः, ब्रह्मपुर }
२४-१२-१९३५ इ०

सज्जनों का सेवक—
विन्ध्येश्वरप्रसादद्विवेदी

ग्रन्थकृच्छ्रं परिचयः—

काव्या उद्योत्पां दिशि नर्करान् ३६ क्रोशे सुदूरं विदुषां निवासे ।
 आजसूनवप्रान्तगते सुम्पे प्राप्ते शुभे ब्रह्मपुत्राभिधाने ॥ १ ॥
 आशीर्द्विवेदी द्विजवर्यपूज्यः श्रीमद्भरद्वाजकृष्णवत्सलः ।
 मान्यो ध्यान्यः प्रपितामहो मे भोले तिनान्ना जगति प्रसिद्धः ॥ २ ॥
 तस्याऽभवन्वह्नि मित्तास्तनूजास्तेष्वप्रजो बालकरामशर्मा ।
 तन्यानुजः कृष्ण इति प्रसिद्धो विद्वद्भरः सद्भिषणाधनाढ्यः ॥ ३ ॥
 श्रीमान्ततो रामहितो महात्मा पितामहो मे सतिमानुदारः ।
 विद्यानयोदारतया स्ववशं स्वजन्मनालंकारणं चकार ॥ ४ ॥
 पुत्रास्तदीया बहवो विनष्टा अन्ते वयन्येव ततो बभूव ।
 धीरो बुदारो विदुषां वरिष्ठः श्रोधर्मदत्तो जनको मदीयः ॥ ५ ॥
 विशत्यब्दवयस्कस्य तस्य पुत्रोऽभवं किल ।
 विन्ध्येश्वरीप्रसादेति नाम्ना लोकेतिविश्रुतः ॥ ६ ॥
 एकाकिनं मां जनको मदीयः सार्धैकवर्षीयमितोऽसहायम् ।
 हा मेऽसहायां जननीं तथा च दुःखाम्बुराशौ नितरं निमग्नम् ॥ ७ ॥
 कृत्वा च माता पितरौ स्वकीयौ धोरान्धकोऽतितरं त्रिलीनौ ।
 चित्तं स्वकीयं कठिनं विधाय यातो दिवं भूनितलं विहाय ॥ ८ ॥

श्रीविश्वनाथकृपया नगरीं तदीयां सम्प्राप्य मातृजनकस्य कृपावलम्बात् ।

रामाभिलाष इति सुप्रथितस्य नाम्ना ज्ञानं ह्यवाप्य मुल्लिपेस्तत एव सम्यक् ॥ ९ ॥

ततः श्रीप्रभुदत्ताख्यमहामहिमशालिनः ।

विज्ञवर्यस्य सविधे यजुर्वेदमपीदम् ॥ १० ॥

श्रीपूज्यपादगुरुवर्यरिसालदत्तज्ज्योतिर्विदः सुधिषणाधनिनस्तथा च ।

लोकोत्तरोत्तमगुणैर्ग्रथितस्य श्रीमत्पूज्याङ्घ्रिप्रद्युगलस्य सुधाकरस्य ॥ ११ ॥

सूनोः समस्तगणितार्णवपारगश्री पद्माकरस्य शरणागतवत्सलस्य ।

ज्योतिर्विदः सकलकाव्यकलाप्रवीण श्रीचन्द्रशेखर सुधीप्रवरस्य तद्वत् ॥ १२ ॥

प्राप्यान्तेवासित्वं तेभ्यः समवाप्य बोधकलिकां च ।

दस्वाचार्यपरोक्षां ज्योतिःशास्त्रे समुत्ती ॥ १३ ॥

लघुजातकस्य सरलां टीकां श्रीबालबोधिनीनाम्नीम् ।

संस्कृतभाषावदां विधाय पूर्वं ततः पश्चात् ॥ १४ ॥

जातकालंकृतेः स्पष्टां हिन्दीटीकां समूमिकाम् ।

हौरिकाणां मनस्तुष्टयै (विनोदाय) विधाय तदनन्तरम् ॥ १५ ॥

अखिलव्यवहृतिसिद्धयै सुफलितनवरत्नसंग्रहं दिव्यम् ।

हिन्दीटीकोपेतं सोदाहरणं प्रकाशयित्वा च ॥ १६ ॥

दूरस्थत्वाद्विदित्वा शिथिलितमखिलं स्वोयगेहप्रबन्धं

ह्येतद्भाग्यं काश्याः सुनिवसनविधिं संविधास्यन् स्वगेहे ।

शुभ्रे संवत्सरे भूमिखगखगधरा १९९१ संमिते वैक्रमीये

ग्रन्थं चेमं सदीकं सुसमुचितचितं पूर्णतां प्रापयामि ॥ १७ ॥

विषयानुक्रमिका ।

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
मङ्गलाचरण	१	भुजांश पर से लग्नस्पष्ट बनाने का उदाहरण	२१
पञ्चाङ्ग पर से ग्रहस्पष्ट करने की रीति	१	भुक्तभोग्यालपत्व में विशेष	२२
घण्टादि (होरादि) से बट्यादि इष्टकाल बनाने की रीति (टिप्पणी में)	१	२५° १९' अक्षांश देशों में सारणी द्वारा लग्नस्पष्ट करने की रीति	२३
उदाहरण	२	लग्न सारणी	२४-२७
क्रान्ति साधन की सारणी	४	नतोन्नत कालज्ञान	२८
सारणी द्वारा स्पष्टा क्रान्ति जानने की रीति	४	दशमलग्न साधन की रीति	२८
चर सारणी ६° अक्षांशसे ३६° अक्षांश तक	५-६	सारणी पर से सब देशों के लिये दशमलग्न साधन की रीति सारणीसहित	२८-३१
चर सारणी द्वारा काशी से अन्यत्र का तिथ्यादि मान जानने की रीति तथा उदाहरण	७	बिना नतकाल के ही दशमसाधन का प्रकार	३२
अन्यदेशीय ग्रह बनाने की रीति	८	१२ भावसाधन	३२
भयात-भभोगानयन	८	१२ भावचक्र	३३
चन्द्रमा स्पष्ट करने की रीति	१०	विशेष	३३
चन्द्रमा स्पष्ट करने की दूसरी रीति	१०	ग्रहों के भाव (अवस्था विशेष) का विचार	३४
पलभा और चरखण्ड का ज्ञान	११	ग्रहों की शयनादि अवस्था का ज्ञान	३४
काशीसे पूर्व देशों के अक्षांश देशान्तर	१२-१३	अन्य प्रकारकी ग्रहों की अवस्थायें	३६
काशी से पश्चिमदेशों के अक्षांश देशान्तर	१४-१७	ग्रहों की पञ्चधा मैत्री	३६
अक्षांश पर से सारणी द्वारा पलभा-ज्ञान की विधि	१८	दशवर्गी	३७
पलभासारणी	१८	राशिस्वामी	३७
लंकोदय पर से स्वोदय ज्ञान	१८	होरा-द्रेष्काण	३८
आजमगढ़ का उदयमान	१९	सप्तमांश	३८
अयनांश स्पष्ट करने की रीति	१९	नवमांश	३८
अयनांश बनाने की दूसरी रीति	२०	दशमांश - द्वादशांश	३८
लग्न स्पष्ट करने की रीति	२०	राशिस्वामी होराद्रेष्काण सप्तमांश-नवमांश बोधक चक्र	३९
भोग्यांश पर से लग्नस्पष्ट करने का उदाहरण	२१	दशमांश द्वादशांश बोधक चक्र	४०
		षोडशांश और षोडशांशचक्र	४०
		त्रिंशदांश और चक्र	४१
		षष्ठ्यांश	४२

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
वर्गों की पारावतादि संज्ञा	४२	आरोहक्रमसे ध्रुवकवशा अन्तरादि का	
६ प्रकारकी विशोत्तरोयादशा	४३	साध	६०
महादशाज्ञान	४३	प्रत्यन्तर का ध्रुवक साधन	६०
महादशाबोधक चक्र	४३	सूक्ष्मदशा प्राणदशा के ध्रुवक साधन	
महादशाभुक्तभोग्यानयन	४४	का प्रकार	६१
महादशा का भोग्यानयन	४४	प्रत्यन्तर के ८१ चक्र	६२-६०
भुक्तभोग्यानयन के उदाहरण	४५	योगिनीदशानयन	६१
महादशा लिखने का क्रमबोधक चक्र	४६	योगिनीदशाबोधकचक्र	६२
स्पष्टचन्द्रमाही पर से दशाका भुक्त-		योगिन्यन्तरदशाज्ञान की रीति	६१
भोग्यानयन	४६	योगिन्यन्तरदशाबोधकचक्र	६१
स्पष्टचन्द्रमाही परसे प्रकारान्तर से		होरालभानयन	६२
भुक्तभोग्यानयन	४६	जैमिनीयायुर्दायसाधन	६३
अंशादिनक्षत्र शेष पर से दशा का		आयुर्दायज्ञान प्रकार	६३
भोग्यानयन	४७	आयुर्दाय बोधक चक्र	६३
अन्तरदशासाधन का सुलभ प्रकार	४७	आयुर्दाय स्पष्ट करने की विधि	६३
अन्तर के ९ चक्र	४८	सारणी	६५
अन्तरादि साधन का दूसरा प्रकार	४९	कक्ष्याहासवृद्धि	६५
अवरोहक्रमसे ध्रुवकवशा अन्तरादि का		अन्यप्रकारसे आयुर्दायविचार	६६
साधन	४९	ग्रन्थसमाप्ति का समय	६६

इति ।

श्रीजानकीजानये नमः ।

जन्मपत्रदीपकः

सोदाहरण—सटिप्पण—हिन्दीटीकया सहितः ।

मङ्गलाचरण—

यत्कृपालेशतः सर्वे केन्द्रेशाद्या दिवोकसः ।

इष्टं दातुं समर्थाः स्युस्तं रामं शिरसा नुमः ॥ १ ॥

जिसकी कृपा के लेश से ब्रह्मा, इन्द्र, महेश इत्यादि देववृन्द अथवा केन्द्रेश इत्यादि (केन्द्र स्थान १।४।७।१० के स्वामी, त्रिकोण स्थान ५।९ के स्वामी इत्यादि) ग्रह अपना २ अभीष्ट फल देने में समर्थ होते हैं, उस भगवान् श्रीरामचन्द्रजी को मैं शिरसे प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

पञ्चाङ्ग पर से ग्रह स्पष्टकरने की रीति—

सूर्योदयाद्यातकालं सावनेष्टं प्रकीर्तितम् ।

पञ्चाङ्गस्थं मिश्रमानं पङ्क्तिसंज्ञं बुधैः स्मृतम् ॥ २ ॥

अनयोरन्तरं कार्य्यमवशिष्टं दिनादिकम् ।

पङ्क्त्याधिक्ये यातसंज्ञमैष्यमिष्टाधिके भवेत् ॥ ३ ॥

यातैष्यकालेन दिनादिकेन

निष्नी गतिः खाङ्गद०हताऽऽप्तभागाः ।

शोध्यथाश्च योज्याः स्फुटखेचरे

पाते तथा वक्रखगे प्रतीपम् ॥ ४ ॥

सूर्य के बिम्बाधोदयकाल से जन्मसमय तक जितना घटी पल बीता हो उस को सावन इष्टकाल और तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) में लिखे मिश्रमानकाल को पंक्ति कहते हैं (ग्रहलाघवीयपञ्चाङ्ग में सूर्योदय काल का ही स्पष्टग्रह बना रहता है, अतः उसमें उदयकाल को ही पंक्ति समझना चाहिये) । इन दोनों ((१) इष्टकाल और पंक्ति) का अन्तर करने (जिस में जो घट

(१) षण्मासि से षट्मासि इष्टकाल बनाने की रीति—

सूर्यबिम्बाधोदय से षट्मासि के भीतर का जन्म हो तो जन्मकालीन

जाय, घटा देने) से जो शेष दिनादिक बचे, वह ंक्ति अधिक हो (अर्थात् पंक्ति में इष्ट घटान से शेष बचा हो) तो यातदिवस (या ऋण चालन), इष्टकाल, अधिक हो (अर्थात् इष्टकाल में पंक्ति घटाने से शेष बचा हो) तो ऐष्यदिवस (या धनचालन) कहलाता है ।

गत (ऋण) अथवा ऐष्य (धन) दिवसादि से पञ्चाङ्ग में लिखे स्पष्ट-ग्रह की गति को गोमूत्रिकागणितद्वारा गुणा करके ६० का भाग देने से जो लब्ध अंश, कला, विकलादि मिले उस को क्रमसे पञ्चाङ्गस्थितस्पष्टग्रह की राश्यादि में घटाने और जोड़ने (अर्थात् यदि यातदिवसादि हो तो लब्ध अंशादि को पञ्चाङ्गस्थस्पष्टग्रह की राश्यादि में घटाने और ऐष्यदिवसादि हो तो लब्ध अंशादि को पञ्चाङ्गस्थस्पष्टग्रह के राश्यादि में जोड़ने) से तात्कालिक स्पष्टग्रह बन जाता है । वक्र ग्रह और राहु-केतु में उलटी क्रिया करने से (अर्थात् ऋण चालन हो तो वक्री-राहु-केतु में जोड़ने से तथा धन चालन हो तो वक्री-राहु-केतु-में घटाने से) स्पष्ट होता है ॥ २-३ ॥

उदाहरण—

श्रीविष्णुमार्कसंवत् १९९१ श्रीशालिवाहनशकाब्द १८६६ शुद्धवैशाख कृष्ण ९ पञ्चमी ४९ । ४४ बुधवार अनुराधानक्षत्र २६ । १४ सिद्धियोग ७ । १८ इसके बाद व्यतिपात योग सामयिक कौलवकरण १८ । १२ में किसी का जन्म हुआ । उस समय सूर्योदयकाल से गत १३ । ५५ सावनेष्टकाल, अनुराधानक्षत्र का मयात ४९ । ५५ और भभोग ६७।१४ है । और उस दिन दिनमान ३०।५० रात्रिमान २९।१० और उसके समीप गुरुवार को ४९।५८ मिश्रमान है ।

यहाँ वारादि सावनेष्टकाल ४।१३।५५ से वारादि पंक्ति ५।४६।५८ आगे है इसलिये वारादि पंक्ति में वारादि सावनेष्ट कालको घटाया तो शेष

= (५।४६।५८) - (४।१३।५५) = १।३२।३ वारादि ऋण चालन हुआ । इस ऋण चालन १।३२।३ से ंक्तिस्थ सूर्य की स्पष्ट गति ५९।० को गुणन करने

सूर्योदयघण्टामिनिट को घटा कर जो शेष बचे उसको ५ से गुणा करके २ का भाग देने से लब्ध घटीपल सावन इष्टकाल होता है ।

मध्याह्नोत्तर निशीथ (आधीरात) के भीतर का जन्म हो तो जन्मकालीन होरादि समय को ५ से गुणा करके २ का भाग देने पर जो लब्ध घटीपल आवे उसको दिनार्ध में जोड़ देने से घटशादिक सावनेष्टकाल हो जाता है ।

निशीथ (आधीरात) के बाद सूर्यबिम्बाधोदय के भीतर का इष्टघट्यादि जानना हो तो जन्मसमय के घण्टामिनिट का पूर्ववत् घटीपल बनाके उसको दिनमान और रात्रिदल के योग में (अथवा दिनार्धघटी तथा ३० घटी के योग में) जोड़ देने से पूर्वसूर्यबिम्बाधोदय से जन्मसमय तक सावन इष्टकाल होता है ।

लिये न्यास—

$$\text{गुणनफल} = (११३२।३)(५९।०)$$

$$= ५९।१०००।१७७$$

= ९०।३०।५७ हुआ । इसमें ६० का भाग दिया तो
 न्वल्पान्तर से १।३०।३१ अंशादि ऋण फल हुआ । इसको पंक्तिस्थ सूर्य के
 राश्यादि ११।२२।२०।३१ में घटाया तो तात्कालिक स्पष्टार्क—

$$= ११।२२^{\circ}।२०'।३१'' - (१^{\circ}।३०'।३१'') = ११।२०^{\circ}।५६'।०''$$

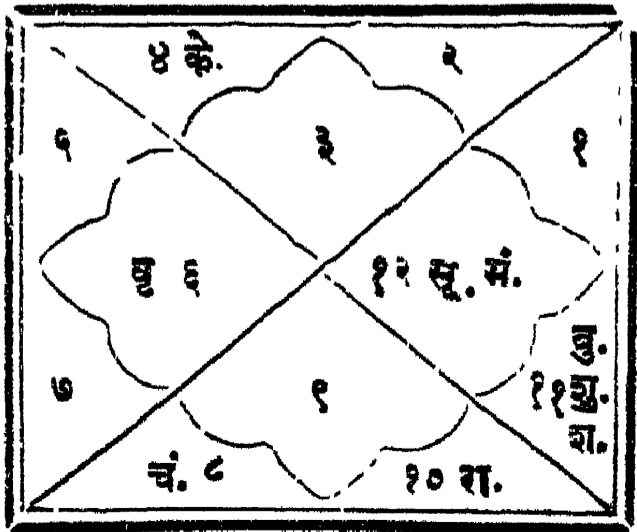
हुआ । ऐसे ही भौमादि ग्रहों का भी साधन करना चाहिये ।

३२ प. ६ गुरौमि. मा. ४५।५८ दि. मा. ३०।५४ जन्मेष्ट ४।१३।५५ कालिकस्पष्टग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११		११	१०	५	१०	१०	९	३
२२		२३	२६	२७	५	०	२५	२५
३८		८	२३	२०	३९	१०	३८	३८
३१		३	१६	८	२१	२७	५६	५६
५९		४५	८२	८४	५७	५	३	३
०		१७	३७	९	७	४३	११	११

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	१०	५	१०	१०	९	३
२०	१४	२१	२४	२७	४	०	२५	२५
५८	१	५८	१६	३२	११	१	४३	४३
०	४९	३५	३१	३८	४४	४९	२२	२२
५९	८३	४५	८२	८४	५७	५	३	३
०	४०	१७	३७	९	७	४३	११	११

जन्मलग्नम् २।२१।४१।१०



क्रान्तिसाधन की सारणी । परमा क्रान्ति २३°२७' ।
 मेषादि छ राशियों में सायनांक हो तो उत्तरा क्रान्ति अन्यथा दक्षिणा क्रान्ति होती है ।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	०	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वृष १	०	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मिथुन २	०	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
कर्क ३	०	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

सारणी द्वारा स्पष्टा क्रान्ति जानने की राति—

सायन सूर्य के राशि और अंश के सामने वाले कोष्ठ में जो अंशादि क्रान्ति हो उसको अलग स्थापन करे । फिर सायन सूर्य के शेष कला विकला गतांश और ऐष्यांश सम्बन्धी क्रान्तियों के अन्तर से गुणा करके ६० का भाग देने पर जो कलादि क्रान्ति आवे उसको अलग स्थापित क्रान्त्यंश में यथास्थान जोड़ देवे तो सायन सूर्य की स्पष्टा क्रान्ति होती है ।

उदाहरण—सायन रवि ०।१२°।२९'।२९" है तो ० राशि १२° के सामने की अंशादिक्रान्ति ४°।४४'।४६" हुई । फिर सायन रवि के कला विकला २९'।२९" को १२° और १३° सम्बन्धि क्रान्तियों के अन्तर से गुणाकरके ६० का भाग दिया तो—

$$\text{कृत्विच} = \frac{(२९'।२९") [(९°।८'।१०") - (४°।४४'।४६")]}{६०} = \frac{(२९'।२९") (०°।२३'।२६")}{६०} = ०°।१२'।३०" \text{ (स्वल्पान्तर से)}$$

मिली । इस को १२° के सामने की अंशादि क्रान्ति में जोड़ दिया तो स्पष्टा क्रान्ति = ४°।४४'।४६" + ०°।१२'।३०" = ४°।४४'।५६" हुई । सायनरवि मेष राशि में है अतः यह ४°।४४'।५७" उत्तरा क्रान्ति हुई ।

यदि काशी से अन्यत्र का तिथि-नक्षत्र-योगों का मान, दिनमान इष्ट-काल और स्पष्टग्रह जानना हो तो देशान्तरसारणी, क्रान्तिसारणी और चरसारणी की सहायता से चाहे जहाँ का तिथ्यादि का मान निकाला जा सकता है ।

उदाहरण—

यदि कलकत्ते का तिथ्यादिमानानयन जानना है तो देशान्तर सारणी से कलकत्ते का अक्षांश $22^{\circ}13'6''$ और काशी से पूर्व पलात्मक 6610 देशान्तर जान कर अलग रख लिया । फिर सायनसूर्य $01^{\circ}29'12''$ पर से क्रान्तिसारणी की सहायता से स्पष्टा उत्तरा क्रान्ति का $8^{\circ}18'19''$ का ज्ञान कर लिया । अब इस उत्तरा-क्रान्ति $8^{\circ}18'19''$ और अक्षांश $22^{\circ}13'6''$ पर से चरसारणी द्वारा चर का ज्ञान करने के लिये पहले—

22° अक्षांश में 8° क्रान्त्यंश का चर = 16111

” 9° क्रान्त्यंश का चर = 20119

60 कला में अन्तर = 318

इस पर से (स्वल्पान्तर से) $89'$ कला क्रान्ति में

त्रैराशिक गणित द्वारा अन्तर = 313

इसको 8° क्रान्ति के चर में जोड़ देने से 22° अक्षांश

में $8^{\circ}18'19''$ क्रान्ति का चर = 19118

फिर—

23° अक्षांश में 8° क्रान्त्यंश का चर = 1710

” 9° क्रान्त्यंश का चर = 21127

60 कला में अन्तर = 4127

इस पर से पूर्ववत् त्रैराशिक द्वारा $89'$

क्रान्ति में अन्तर = 312

इसको 8° क्रान्ति में जोड़ने से 23° अक्षांश में $8^{\circ}18'19''$ क्रान्ति का

चर = 20117

उसके बाद—

22° अक्षांश में चर = 19118

23° अक्षांश में चर = 20117

60 कला में अन्तर = 113

फिर त्रैराशिक से $39'$ अक्षांश में

अन्तर = 0137 (स्वल्पान्तर से)

इसको 22° अक्षांश के चर में जोड़ देने से कलकत्ते में उस दिन का स्पष्ट चर

उत्तरा क्रान्ति है अतः १५ घटी में चर पल १९.५१ का
जोड़ देने से उमदिन कलकत्ते का दिनार्ध = १५।१९।५१
उस दिन पञ्चाङ्ग से काशीका दिनार्ध = १५.२५।०

दोनों का अन्तर = ०।५।९

काशी के दिनार्ध से कलकत्ते का दिनार्ध छोटा है इस लिये यह अन्तर ऋण हुआ । यदि कलकत्ते का दिनार्ध बड़ा होता तो यहाँ अन्तर धन आता और कलकत्ता काशी से पूर्व है इसलिये देशान्तर पल ५५।० धन हुआ । काशी से पश्चिम देशों का देशान्तर ऋण होता है ।

अब पञ्चाङ्गस्थ तिथ्याग्निमान में संस्कार करने से कलकत्ते का तिथ्यादि मान—

पञ्चाङ्गस्थ तिथि=४६।४४।०	नक्षत्र = २६।१४।०	योग = ७।१८।०
दिनार्धान्तर = -०।५।९	= -०।५।९	= -०।५।९
देशान्तर = +०।५५।०	= +०।५५।०	= +०।५५।०
कलकत्तेकीतिथि=४६।३३।५१	= २६।३।५१	= ८।७।५१

यहाँ ५१ विपल के स्थान में १ पल मान लिया तो कलकत्ते में पञ्चमी=४६।३४
अनुराधानक्षत्र = २६।४ व्यतिपात योग = ८।८ हुआ ।

अन्यदेशीय स्पष्टग्रह बनाने की रीति—

यदि काशी से अन्यत्र का ग्रहस्पष्ट बनाना हो तो काशी के धन ऋण वारादि चालन में देशान्तर और चरान्तर का विपरीत संस्कार करने से तत्तद्देशीय धन ऋण चालन होता है । उस पर से उपर्युक्त विधि से तत्तद्देशीय स्पष्ट ग्रह बन जाता है ।

भयात-भभोगानयन—

गतर्क्षघटिका स्वाङ्ग ६० शुद्धा स्वेष्टघटीयुता ।

भयातं स्याद्भभोगस्तु निजर्क्षघटिकायुता ॥ ५ ॥

चेद्यातर्क्षघटी स्वेष्टात्पूर्वमेव समाप्यते ।

तदेष्टकालात्सा शोध्याऽवशिष्टं भगतं भवेत् ॥ ६ ॥

गतर्क्षं क्षयसंज्ञं चेत्कार्ये तर्क्षघटी तदा ।

तत्पूर्वर्क्षघटीयुक्ता शेषं पूर्ववदाचरेत् ॥

एवं भद्रौ भयातादि विज्ञेयं स्वधिया बुधैः ॥ ७ ॥

यदि गतनक्षत्र का अन्त पूर्वदिन में होता हो तो गतनक्षत्र के मान (घटी-पल) को ६० घटी में घटा कर जो शेष बचे उसमें इष्टकाल जोड़ देने से भयात होता है । और उसी शेष में वर्तमान नक्षत्र के घटी-पल को जोड़ देने से भभोग हो जाता है ।

यदि गतनक्षत्र का अन्त उसीदिन इष्टकाल के पूव होता हो तो गतनक्षत्र के घटी पल को ही इष्टकाल में घटा देने से शेष भयात होजाता है । यहाँ भी अभोग बनाने की क्रिया पूर्ववत् ही है ।

यदि गतनक्षत्र की हानि हुई हो तो क्षयनक्षत्र के पूर्वनक्षत्र और क्षयनक्षत्र इनदोनों के घटीपल को जोड़ के जितना घटिकादि हो उसको गतनक्षत्रमान मान के उस पर से पूर्वविधिके अनुसार भयात-भोग बनाना चाहिये ।

एवं यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हुई हो और तीसरे दिन नक्षत्रान्त से पूर्वका इष्टकाल हो तो प्रथमविधि के अनुसार भयात-भोग बना के दोनों में ६० घटी जोड़ देने से वास्तविक भयात-भोग होता है ॥ ५-७ ॥

उदाहरण—

गत नक्षत्र विशाखा के घटी पल २८१० को ६० घटी में बढ़ाया तो $६० - (२८१०) = ३२१०$ शेष घट्यादि हुआ । इस ३२१० में सावनेष्टकाल १३१६२ को जोड़ दिया तो $३२१० + (१३१६६) = ४६३७६$ भयात हुआ । और उसी शेष ३२१० में अनुराधा के घटी पल २६११४ को जोड़ दिया तो $३२१० + (२६११४) = २९३२४$ भोग हो गया ।

सं० १९९१ शुद्धवैशाखकृष्ण १० सोमवार श्रवण ९१४३ को १० । ४८ इष्टकाल पर जन्म है तो यहाँ इष्टकाल से पूर्वही गतनक्षत्र श्रवण की समाप्ति होती है अतः इष्टकाल १० । ४८ में श्रवण के घटी पल ९१४३ को घटा दिया तो धनिष्ठा का ६१६ भयात होगया । और पूर्वविधि से धनिष्ठा का भोग ६६१२४ हुआ ।

शुद्ध वैशाखवदी १२ बुधवार पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र ९६१६३ के दिन सूर्योदय से २३ । ३६ इष्टकाल पर जन्म है तो यहाँ पूर्वदिन शततारकानक्षत्र की हानि है । इस लिये उस से पूर्व धनिष्ठा नक्षत्र के मान २१७ को गतनक्षत्र शतभिष के मान ९६ । ६७ में जोड़ कर $९६१६७ + (२१७) = ९६३८४$ गतनक्षत्र का मान कल्पना करके पूर्वोदित विधि के अनुसार पूर्वा भाद्रपदा का भयात २४ । ३२ और भोग ९७ । ४९ हुआ ।

अधिक वैशाख सुदी ४ चतुर्थी भौमवार को ११६ इष्टकाल पर जन्म है । उस दिन कृत्तिका नक्षत्र का ११४२ घटीपल पर अन्त है तो यहाँ नक्षत्र वृद्धिके कारण दूसरे पूर्वदिन (द्वितीया रविवार) को रात्रिमें ६८१२० घट्यादि पर भरणी का अन्त है । अतः भरण्यन्त ६८१२० को ६० में बढ़ाया तो ११४६ शेष हुआ । इसमें इष्टकाल ११६ और ६० जोड़ दिया तो कृत्तिका का भयात $११४६ + ६० + ११६ = ६२१५०$ हुआ । उसी शेष ११४६ में कृत्तिकान्त ११४२ घटीपल और ६० को जोड़ दिया तो $११४६ + ६० + ११४२ = ६३१२७$ भोग हुआ । एवं सर्वत्र पूर्वापर दिन के

चन्द्रमा स्पष्टकरने की रीति—

भयातं भभोगाद्धृतं तद्गतसैर्युतं स्वाब्धि ४०निघ्नं विभक्तं क्रमेण ३।
फलं भागपूर्वः शशी तद्गतिः स्वाभ्रखाभ्रेभनागाश्विनो भोगभक्ता ॥८॥

पलात्मक भयात में पलात्मक भभोग का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गतनक्षत्र की संख्या में जोड़ देना । फिर योग फल को ४० से गुणा करके ३ से भाग देने पर लब्धि अंशादि स्पष्ट चन्द्रमा हाता है । यहाँ अंश संख्यामें ३० का भाग देकर लब्धि राशि और शेष अंश बना लेने पर राश्यादि चन्द्रमा स्पष्ट हो जाता है । और २८८०:०० में पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि चन्द्रमा की स्पष्टा गति होती है ॥ ८ ॥

उदाहरण—

अदुराधा नक्षत्रके भयात ४६।६६ और भभोग ६७।१४को ६०से गुणाकर दिया तो पलात्मक भयात २७६६ और ३४३४ भभोग हुआ । इस पलात्मक भयात २७६६ में पलात्मक ३४३४ भभोग का भाग दिया तो लब्धि = $\frac{२७६६}{३४३४} = ०।४८।८।११$

आई । इसमें गतनक्षत्र विशाखाकी संख्या १६को जोड़ दिया तो योग १६।४८।८।११ हुआ । इसको ४० से गुणा करके ३ से भाग दिया तो—

$$\frac{(१६।४८।८।११)४०}{३} = \frac{६७२।६।२७।२०}{३} = २२४^{\circ}।१'।४९'' = \text{लब्धि अंशादि}$$

स्पष्ट चन्द्रमा हुआ । यहाँ प्रथम स्थान २२४ में ३० का भाग देने से लब्धि ७ राशि और शेष १४ अंश हुए । अत एव ७।१४^०।१'।४९'' राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा हुआ ।

अट्टाईसलाख अस्सी हजार २८८०००० में पलात्मक भभोग ३४३४ से भाग दिया तो लब्धि = $\frac{२८८००००}{३४३४} = ८३८'।४०''$ चन्द्रमा की स्पष्टा गति हुई ॥

चन्द्रमा स्पष्ट करनेकी दूसरी रीति—

भाद्भिघ्नभुक्तघटी स्वाभ्राश्विघ्नी भाद्भिघ्नघटीहता ।

लब्धं कलाद्यं चन्द्रस्य गतराश्यादिना युतम् ॥

स्फुटः स चन्द्रो विज्ञेयो गतिः पूर्वोदिता यता ॥ ९ ॥

नक्षत्रचरणभुक्तघटी को २००से गुणा करके चरणभोगघटी से भाग देने पर जो लब्धि कलादि प्राप्त हो उस को चन्द्रमा की गतराशिसंख्या और वर्तमान चन्द्र राशि के गतनवांशांशादि के योग में जोड़ देने से स्पष्ट राश्यादि चन्द्रमा होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण—

भयात में ४ का भाग दिया तो चरणभोग = $\frac{९७११४}{४}$ १४१९८।३० हुआ

त्रिगुणितचरणभोग को भयातघटी में घटाया तो नक्षत्र चरणका भुक्तघट्यादि

$$= ४९१९९-३ (१४१९८।३०) = २१९९।३० हुआ ।$$

चरणभुक्तघटी को २०० से गुणा के चरणघटी से भाग दिया तो लब्धि

$$\text{कलादि} = \frac{(२१९९।३०) २००}{१४१९८।३०}$$

$$= \frac{१०७७० \times २००}{११९९०}$$

$$= \frac{२१९४००}{११९९} = ४१'१४९'' \text{ आई ।}$$

और १४१ शेष बँचा इस को त्याग दिया । लब्ध कलादि को चन्द्रमा की गत-
राशि संख्या ७ और वर्तमान चन्द्रराशि वृश्चिक के गतनवांशसंख्या ४ के अंशादि
१३°१२०' के योग = ७।१३°१२०' में जोड़ दिया तो रात्र्यादि स्पष्टचन्द्रमा
= ७।१३°१२०' + ४१'१४९'' = ७।१४°११'१४९'' हो गया ।

पलभा-चरखण्डज्ञान—

दिनार्धकालेऽजमुखस्थिते या भा सायनाके पलभा भवेत्सा ।

दिग्भिर्गजैर्दिग्गुणितैर्गुणांशैस्त्रिष्टा इताः स्युश्चरखण्डकानि ॥ १० ॥

जब मध्याह्नकाल में सायन सूर्य मेषादि में हो उस दिन मध्याह्नकालमें
१२ अंगुल शंकु की छाया को पलभा कहते हैं । पलभा को ३ स्थानों में
रख के क्रमसे १०, ८, $\frac{१०}{३}$ से गुणा कर देने पर मेषादि राशियों के ३
चरखण्ड होते हैं ॥ १० ॥

उदाहरण—

आजमगढ़ की पलभा ९।९१ को ३ स्थानों में ९।९१, ९।९१, ९।९१ रख
के क्रमसे १०, ८, $\frac{१०}{३}$ से गुणा कर दिया तो गुणन फल ९८।३०, ४६।४८, $\frac{९८।३०}{३}$

हुए । सर्वत्र “अर्धाधिके रूपं ग्राह्यमर्धालपे त्याज्यम्” इस नियम के अनुसार दूसरे
अंको को त्याग दिया तो क्रमसे ९८।४६।१९ मेषादि के चरखण्ड हो गये ।

यहाँ जो पलभाज्ञान प्रकार दिया है उस से सर्वत्र की पलभा का ज्ञान हो
जाना सुलभ नहीं है । अतः इस कठिनाई को दूर करने के अग्निप्राय से कतिपय देशों
के अक्षांश और उस पर से पलभाज्ञान की सारणी नीचे दी जाती है—

काशी से पूर्व देशों के अक्षांशादि—

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०	देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
अकथाव (बर्मा)	२९१०	११४०।०	गुरखा (नेपाल)	२७।५५	०।१५।०
अगरतला (बंगाल)	२३।५०	१।२३।५०	गोपालपुर (मद्रास)	१९।१६	०।१९।३०
अंगलस्टेट (बिहार)	२०।४८	०।२०।१०	गोरखपुर (यू०पी)	२६।४२	०।२।२०
अमरपुर (बर्मा)	२१।५५	२।११।१०	गोलाघाट (आसाम)	२६।३०	१।४९।०
अनादा राज्य	२६।९	०।२८।२०	गोहाटी (आसाम)	२६।११	१।२७।०
अलन (बर्मा)	२२।११	२।१।३०	चन्दपुर (बंगाल)	२३।१३	१।१६।४०
अलीगंज हथुला	२६।५०	०।१४।०	चन्दर नगर (बंगाल)	२२।५२	०।५४।१०
अलीपुर (बंगाल)	२२।३२	०।५४।०	चेरापंजी (आसाम)	२६।१७	१।२७।५०
आजमगढ़ (यू०पी०)	२६।०	०।२।३०	चेवासा (बिहार)	२२।३३	०।२८।०
आरा (बिहार)	२५।३४	०।१७।१०	छत्तरपुर (मद्रास)	१९।२१	०।२।१०
आराकान (बर्मा)	२०।५०	१।४४।४०	छपरा (बिहार)	२५।४७	०।१७।०
आवा (बर्मा)	२२।०	२।३०।१०	छयगाव (आसाम)	२६।५	१।२३।०
आसनसोल (बंगाल)	२३।४२	०।४०।१०	छोटानागपुर (बिहार)	२३।०	०।२०।०
आसाम	२६।०	१।४०।०	जगन्नाथगंज (बंगाल)	२४।३९	१।८।२०
इंग्लिशबाजार (बंगाल)	२६।०	०।५१।५०	जगन्नाथपुरी (बिहार)	१९।४५	०।३०।०
इच्छागढ़	२३।५		जनकपुर	२३।४३	०।१२।०
उड़ीसा	२१।१०	०।२९।४०	जमालपुर (बिहार)	२५।१९	१।१०।०
ऐजल (आसाम)	२३।४४	१।४५।०	जयपुर (बिहार)	२०।५१	०।३३।५०
कछार (बिहार)	२५।३०	०।४६।४०	जलपाईगुरी (बंगाल)	२६।३२	०।५७
कटक (बिहार)	२०।२८	०।३०।०	टाटा नगर (बिहार)	२२।५०	०।३१।४
कलकत्ता	२३।३५	०।५५।०	टेकारी	२४।४८	०।१७।३०
कलिङ्गपट्टम् (मद्रास)	१८।२०	०।११।४१	डालटनगंज (बिहार)	२४।२	०।९।०
काठमण्डू (नेपाल)	२७।४२	०।२२।०	डिवरुगढ़ (आसाम)	२७।२९	१।५९।०
कृष्णगढ़ (बंगाल)	२३।२४	०।५५।३०	डोमापुर (आसाम)	२५।५१	१।४८।०
कुदरा	२५।५६	०।६।१०	हुमरांव	२५।३२	०।१२।०
कुमिल्ला (बंगाल)	२३।२५	१।२३।२०	हुमरिया इस्टेट	२७।२९	०।१५।६
कृचबिहार (बंगाल)	२६।२०	१।४।५०	ठाका (बंगाल)	२३।४३	१।१५।८
कोचीन (बर्मा)	१२।६।०	२।२०	दमदम (बंगाल)	२२।३८	०।५४।४०
खण्डपारा (बिहार)	२०।१६	०।२२।०	दरभङ्गा (बिहार)	२६।१०	०।३०।०
खझारस्टेट (बिहार)	२१।३७	०।२६।२०	दार्जिलिङ्ग (बंगाल)	२७।३	०।५२।४०
खुरदा (बिहार)	२०।११	०।२६।४०	दिनाजपुर	२५।२७	०।५७।३०
गञ्जाम (मद्रास)	१९।२२	०।२१।०	दुमका (बिहार)	२४।३०	०।४३।४०
गया	२४।४९	०।२०।०	देवगढ़ (बिहार)	२१।३२	०।१७।४०
गरवा (बिहार)	२४।१०	०।८।४०	देवगढ़ (बिहार)	२४।३०	०।३७।३०
गाजीपुर (यू०पी)	२५।३४	०।४।०	धवलागिरि (नेपाल)	२९।११	०।२०।०
गवालन्दो (बंगाल)	२३।५०	१।७।४०	धानकुटा (नेपाल)	२६।५५	०।४३।२०
गवालपाडा (आसाम)	२६।११	१।१६।१०	धुवरी (आसाम)	२६।२	१।१०।०
गिदौर	२४।५१	०।३३।०	नदिया (बंगाल)	२३।२४	०।५९।२०

देशनाम	जक्षांश	देशान्तरव०	देशनाम	जक्षांश	देशान्तरव०
नरायणगंज (बंगाल)	२३।२७	१।१०।१०	मोकामा	२५।२४	०।२९।१०
नीलगिरिराज्य(बिहार)	२१।२७	०।३७।५०	मौलमोन (बर्मा)	१६।३०	७।२६।०
नेवाउपुर (नेपाल)	२७।४५	०।१२।०	रंगून (बर्मा)	१६।४५	७।१४।०
नेपालराज्य(हिमालय)	२७।५९	०।१।४०	रङ्गपुर (बङ्गाल)	२५।४५	१।०।०
पटना (उड़ीसा)	२०।२४	०।१२।१०	रांची (बिहार)	२३।२३	०।२३।४५
पद्मना (बङ्गाल)	२४।१	१।३।०	राजमहल	२२।२	०।४८।३०
पलासी	२३।३१	०।४९।४०	रामपुर (बिहार)	२१।५	०।१३।४०
पलामू	२३।५२	०।१३।०	रावीगंज (बङ्गाल)	२३।३५	०।४१।०
पुर्निया (बिहार)	२५।४९	०।४५।०	लक्ष्मीनाराय	२५।१०	०।३३।३०
पेगू (बर्मा)	१७।१५	२।१५।०	लखीमपुर(आसाम)	२७।१४	१।५१।१०
प्रोम (बर्मा)	१८।४७	२।२।३०	लासो (बर्मा)	२२।०८	१।२९।४०
फरीदपुर (बङ्गाल)	२३।३६	१।७।४०	लोहरडगा(बिहार)	२३।२६	०।४२।३५
बकसर (बिहार)	२५।३४	०।२०।१०	ढाँकोक (बर्मा)	१४।०	७।००।०
परदमान (बङ्गाल)	२३।१३	०।४८।०	वारपेटा (आसाम)	२६।०	१।२०।३०
बरहमपुर (मद्रास)	१९।१८	०।१८।३०	वारकपुर (बङ्गाल)	२२।४३	०।५४।०
जलिया (यू० पी०)	२५।४४	०।१२।०	वाराहभूमि	२३।१०	०।३४।०
ब्रह्मपुर (बङ्गाल)	२४।६	०।५१।०	वारीपद (बिहार)	२१।६६	०।३७।४०
ब्राहुडा (बङ्गाल)	२३।१४	०।४१।१०	बिहार	२५।११	०।२५।०
बाकरगंज (बङ्गाल)	२२।२९	१।१३।१	बेतिया (बिहार)	०३।४८	०।१५।१०
बालासोर (बिहार)	२१।३०	०।३२।०	वैद्यनाथ धाम	२४।३०	०।३७।१०
बाँकीपुर (बिहार)	२५।४०	०।२२।०	नाक्तिगढ़	२२।१	०।५०।०
बाँसी (बिहार)	२४।४०	०।३९।४०	शान्तिपुर (बङ्गाल)	२३।१४	०।५४।५०
बैरीसाल (बङ्गाल)	२२।४३	१।१४।०	ब्र्याम	१४।०	२।५०।०
बागरा (बङ्गाल)	२४।५१	१।४।२०	बिबिसामर (आसाम)	२६।०९	१।५६।०
भटगौन (नेपाल)	२७।४२	०।२३।४०	सदिया (आसाम)	२७।५०	७।४।०
भभुआ	२५।५	०।५।५०	सम्बलपुर (बिहार)	०१।२८	०।१।०
भागलपुर (बिहार)	२५।१५	०।४०।०	सरगुजा	२३।५	०।५०।०
भामू (बर्मा)	२४।१६	०।२०।०	समस्तीपुर	२१।३५	०।१०।०
भूटान (हिमालय)	२७।३०	१।२०।०	ससराम (बिहार)	२४।५७	०।१५।०
भैरवबाजार (बङ्गाल)	२४।२	१।१९।५०	सिलहट (आसाम)	०४।५३	१।३९।०
भकसूदाबाद	२४।११	०।५३।०	सिलहट (आसाम)	२६।३०	१।४०।०
भदारीपुर (बङ्गाल)	२३।१४	१।१२।३०	सिलचर (आसाम)	०४।५०	१।४४।४०
भधुवनी (बिहार)	२६।२१	०।३१।१०	सिंहभूमि	२२।१५	०।२३।०
भकीपुरराज्य(आसाम)	२४।४४	१।४९।४०	सिंगापुर	२१।०	३।२०।०
भादले (बर्मा)	२२।०	२।१०।०	सीतामढ़ी	२६।३४	०।२४।०
भानेचौक	२६।७	०।२७।३०	सुन्दरगढ़ (बिहार)	२२।६	०।२०।०
भाकदह (बङ्गाल)	२५।२	०।५१।२०	सेहडा	२५।२८	०।१७।३०
भुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३।१०	सोनपुर	२१।५	०।१७।०
भुंगेर (बिहार)	२५।२३	०।३५।०	हजारीबाग (बिहार)	२३।५९	०।२४।०
भुजङ्गरपुर(बिहार)	२६।७	०।२४।०	हावीगंज (आसाम)	२४।२४	१।२५।०
भेदिनीपुर	२२।२९	०।४४।०	हाक (बर्मा)	२२।४०	१।४६।५०
भैमनसिंह (बङ्गाल)	२४।४६	१।१४।०			
भोतिहारी	२६।४०	०।१६।४०			

काशी से पश्चिम देशों के अक्षांशदेशान्तर—

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरव०
अकालकोट (बम्बई)	१७।३१	१। ७।३०
अकोला (बरार)	२०।४२	०।५९।२०
अजन्ता (हैदराबाद)	२०।३३	०।१२।०
अजमेर (राजपुताना)	२६।२७	१।२३।०
अजयगढ़ (सी०आई)	२४।५३	०।२७।५०
अज्जार	२३।४	२। ७।२०
अटक (पञ्जाब)	३३।५३	१।४७।१०
अनन्तपुर (मैसूर)	१४।५	१।१७।१०
अनुसूयपुर (लङ्का)	८।२२	०।२६।१०
अनूपशाहर	२८।२१	०।४६।४०
अमरावती (बरार)	२०।५६	०।५२।१०
अमरेली (बड़ोदा)	२१।३६	१।५७।३०
अमरोहा (यू०पी०)	२८।४४	०।४४।५०
अमृतसर (पञ्जाब)	३१।३७	१।२२।०
अमेठी	२६।७	०।१२।०
अम्बर (राजपुताना)	२६।५९	१। ७।१०
अम्बा (हैदराबाद)	१८।४४	१। ६।१०
अम्बाला (पञ्जाब)	३०।२१	१। १।२०
अयोध्या	२६।४८	०। ७।३०
अरन्तजी (मद्रास)	१०।११	०।३९।४०
अरवी (सी० पी०)	२०।५९	०।४७।२०
अलमोडा	२९।३७	०।३३।१०
अलवर	२७।३४	१। ३।२०
अल्पी (द्राघकोर)	९।३०	१। ६।१०
अलीगढ़ (यू०पी०)	२७।५४	०।४९।०
अलीबाग (बम्बई)	१८।३९	१।४०।५०
अलीराजपुर	२२।११	१।२६।०
अस्तूर (काश्मीर)	३५।२०	१।२१।४०
अहमदनगर (बम्बई)	२२।३८	१।४०।०
अहमदनगर (बम्बई)	१९।५	१।२०।२०
अहमदपुर (पञ्जाब)	२९।६	१।५७।२०
अहमदाबाद (बम्बई)	२३।२	१।४३।२०
आगरा (यू० पी०)	२७।१०	०।४७।३०
आधु (राजपुताना)	२४।३६	१।४२।३०
आरकाट (मद्रास)	१२।५५	०।३६।०
आरनी (मद्रास)	१२।४०	०।३६।५०
आसकोल (काश्मीर)	३५।५०	१।११।३०
आरकोनम् (मद्रास)	१३।५	०।३२।५०
इटावा (यू० पी०)	२६।४७	०।४०।३०
इन्दौर	२२।४४	१।१०।०
इम्फाक (मन्नीपुर)	२४।४४	१।४९।२०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरव०
इलोरा (हैदराबाद)	२०।२	२।१७।२०
उज्जैन (ग्वालियर)	२३।९	१। ९।७
उज्जाव (यू० पी०)	२६।२०	०।२७।०
उटकमण्ड (मद्रास)	११।२४	१। ३।२०
उदयपुर (राजपुताना)	२४।३५	१।३२।२०
उमरकोट (बम्बई)	२५।२२	२।१२।१०
उसका (यू० पी०)	२७।१४	०। २।१०
एटा (यू० पी०)	२७।३५	०।४२।२०
औरंगाबाद	१९।५३	१।१७।५०
कच्छ (स्टेट)	२३।३०	२।२८।०
कटनी (सी० पी०)	२३।४७	०।२५।३०
कपूरथला (पञ्जाब)	३१।२३	१।१६।०
करौली (राजपुताना)	२६।३०	०।५९।२०
कराची (बम्बई)	२४।५१	२।३८।४०
करीमनगर (हैदराबाद)	१८।२८	०।३९।०
कन्नौज (यू० पी०)	२७।३	०।२०।२०
कर्नाटक	१३।०	०।४०।०
कर्नूल (पञ्जाब)	२९।४२	१। ०।४०
कंकर (सी० पी०)	२०।१५	१।१४।४०
कसौली (पञ्जाब)	३०।५३	१।५९।५०
काकरौली	२५।०	१।३०।०
काजीवरम् (मद्रास)	१२।५०	०।३२।३०
काठगोदाम (यू० पी०)	२९।१६	०।३६।०
काठयावाड़ (बम्बई)	२२।०	२। ०।०
कानपुर (यू० पी०)	२४।२८	०।२७।३०
कालाबाग (पञ्जाब)	३२।४८	१।५४।०
कालीकट (मद्रास)	११।१५	१।११।५०
कालपी	२६।८	०।३२।०
किशनगढ़ (राजपुताना)	२६।३४	१। ८।०
कुण्डापुर (मद्रास)	२३।३८	१।२३।४०
कुनूर (मद्रास)	११।२०	१। १।४०
कुमौल (यू० पी०)	२९।५५	०।३७।०
कुम्भकोणम्	१०।५८	०।३७।०
कुलक्षेत्र	३०।०	१। ९।०
कोकनद (मद्रास)	१६।५७	०। ७।३०
कोचीनराज्य (मद्रास)	९।५८	१। ८।२०
कोटाराज्य (राजपुताना)	२५।१०	१।११।५०
कोलंबो (लङ्का)	६।५६	०।३०।३०
काकाचल (द्राघकोर)	८।१०	०।५८।२०
कोल्हापुरराज्य (बम्बई)	१६।४२	१।२८।०
खीरी (यू० पी०)	२७।५४	०।२२।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
छुरजा (यू० पी०)	२८।१६	०।६१।४०
खान्देश (बम्बई)	२०।४६	१।२०।०
खैरगढ़ (सी० पी०)	२१।२६	०।१९।४०
मन्साल (यू० पी०)	३०।१६	०।४३।४०
मन्जियाबाद	२८।३५	०।६९।२०
गुजगांव (पञ्जाब)	२८।३५	०।६९।२०
गुरदासपुर (पञ्जाब)	३२।३३	१।१६।३०
गुजराबाला (पञ्जाब)	३२।१०	१।२७।४०
गुजरात जि० (बम्बई)	२३।०	१।४६।०
गुजरात (पञ्जाब)	३२।३६	१।२९।१०
गोलकुण्डा (हैदराबाद)	१७।२३	०।६।२०
गोलगोंडा (मद्रास)	१७।४१	०।४।२०
गोंडा (यू० पी०)	२७।२८	०।१०।०
ग्वालियर	२६।१४	०।४९।२०
चतुरपुर (मद्रास)	१९।२१	०।३४।३०
चंदौली	२८।२८	०।४२।०
चन्दा (सी० पी०)	१९।६७	०।३६।३०
चम्बाराज्य (पञ्जाब)	३२।२९	१।६।०
चिंटा (राजपुताना)	२४।६४	१।२३।०
चित्तौड़ (मद्रास)	१३।१३	१।२६।२०
चित्रकूट	२६।१२	०।२१।०
चिनाव	३१।०	२।६।०
चैनपुर	२७।२८	
छत्तीसगढ़स्टेट (सी. पी.)	२१।३०	०।१०।०
छत्तरपुरस्टेट (सी० आई)	२४।६८	०।३३।४०
छिन्दवारा (सी० पी०)	२२।३	०।४०।१०
जगदलपुर (सी० पी०)	१९।६	०।१।१३
जनकपुर (सी० पी०)	२३।४३	०।१२।०
जफराबाद (बम्बई)	२०।६२	१।८।४०
जबरा (सी० आई)	२३।३६	१।२८।३०
जबलपुर (सी० पी०)	२३।१०	०।३०।२८
जम्बूराज्य (काश्मीर)	३२।४४	१।२१।०
जयपुर (झाडी)	१८।६७	०।३।४०
जयपुरराज्य		
(राजपुताना)	२६।६६	१।१३।४०
जलालपुर	३२।४०	१।३७।६०
जलन्धर (पञ्जाब)	३१।१९	१।२०।०
जहाजपुर (राजपुताना)	२६।३८	१।१६।६०
जामनगर	२२।२७	२।१०।०
जालौन (यू० पी०)	२६।८	०।४९।०
जौदाराज्य (पञ्जाब)	२९।१९	१।६।०
जूनागढ़राज्य (बम्बई)	२१।३१	२।४।०
जैसलमेर राज्य		
(राजपुताना)	२६।६६	१।६९।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
जोधपुरराज्य (राजपु०)	२६।१८	१।३९।२०
जौनपुर (यू० पी०)	२६।३६	०।३।०
जौहरस्टेट (बम्बई)	१९।६७	१।३६।००
झालरापाटन (राजपु०)	२४।३२	१।८।०
झांसी (यू० पी०)	२६।२७	०।४६।२०
झुनझुन (राजपुताना)	२८।९	१।१६।०
डोंक राज्य		
(राजपुताना)	२६।११	१।१२।३०
ट्रावण्कोरराज्य (मद्रास)	९।०	१।०।०
दर्राइस्माइलखी		
(पञ्जाब)	३१।६१	२।१।२०
डूंगरपुरस्टेट (राजपु०)	२३।२०	१।३१।४०
डिडवना (राजपुताना)	२८।१७	१।२७।६०
डूंगरगढ़ (सी० पी०)	२१।१२	०।२८।२०
तन्नोर (मद्रास)	१०।४५	०।३१।०
तारागढ़ (अजमेर)	२६।०	१।२६।४०
त्रिचनापल्ला (मद्रास)	१०।६०	०।४३।१०
त्रिवेन्द्रम् (ट्रावण्कोर)	८।२९	१।१।१००
द्वारका (बरोदा)	२२।१४	२।२।०
दिलावर	३९।४६	१।६४।२०
देवासस्टेट (सी. आई)	२२।६८	१।९।०
देवली (अजमेर)	२६।४६	१।१६।६०
देहरादून (यू० पी०)	३०।१९	०।४९।१०
देहली	२८।३८	०।६५।३०
दौलताबाद (हैदरा०)	१९।६७	१।१७।३०
धारनपुरस्टेट (बम्बई)	२०।३२	१।३७।६०
धरमशाला (पञ्जाब)	३२।१९	१।६।१०
धवलपुरस्टेट (राजपु०)	२६।४२	०।६१।३०
नरसिनगढ़ राज्य	२३।४४	०।६८।४०
नरसिंहपुर (सी० पी०)	२२।६७।	०।३७।३०
नवानगर राज्य (बम्बई)	२२।२७	२।८।६०
नागपुर (सी० पी०)	२१।९	०।३९।१०
नागपुर	२०।०	०।२८।२०
नागौर	२७।१६	१।३३।४०
नाथद्वार	२४।६२	१।३०।०
नाभाराज्य (पञ्जाब)	३०।२६	१।८।०
नारनौल (पठियाला)	२८।२	१।८।४०
नासिक (बम्बई)	२०।२	१।३२।०
निजामाबाद (हैदरा०)	१८।४०	०।४८।२०
नीमच	२४।२७	१।२।१२०
नैनीताल (यू० पी०)	२९।२३	०।३६।०
नैपालगंज (यू० पी०)	२७।६९	०।३४।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरव०
पटियालाराज्यपञ्जाब	३०।२०	१। ५।०
पण्डरपुर (बम्बई)	१७।४१	१।१६।१०
प्रतापगढ़ राज्य (राजपुताना)	२४।२	१।१२।२०
प्रतापगढ़ जि० (यू० पी०)	२४।२७	०।१३।०
प्रयाग (यू० पी०)	०५।२८	०।११।२०
पाठनकोट (पञ्जाब)	२८।१८	१। २।०
पांडाचेरी (मद्रास)	११।५३	०।३२।१०
पन्नास्टेट(सी०आई)	२४।३४	०।२७।४०
पानीपत (पञ्जाब)	२९।२३	१।१९।३०
पालनपुर	२४।१२	१।४२।५०
पीलीभीत (यू० पी०)	२८।४०	०।३२।०
पूना (बम्बई)	१९।०	१।३०।२०
पोरबन्दर (बम्बई)	२१।३७	२।१३।३०
पेशावर	३४।२	१।५५।०
पुष्कर	२६।२८	०।२५।०
फतेगढ़ (यू० पी०)	२७।२३	०।३३।२०
फतेपुर (यू० पी०)	२५।५५	०।२२।५०
फतेपुर सिकरी	२७।६	०।५३।०
फतेपुर (राजपुताना)	२८।०	१।१९।४०
फरादकोट (पञ्जाब)	३०।४०	१।२२।३०
फरुखाबाद (यू० पी०)	२७।२४	१। ०।२०
फिरोजपुर (पंजाब)	२७।४७	०।३०।१०
फिरोजपुर (पंजाब)	३०।५५	१।२४।०
फिरोजाबाद	१७।१५	१।० १२।०
बहोत (बम्बई)	१७।५७	१।३९।१०
बघेलखण्ड(सी०आई)	२४।१०	१।१०।०
बङ्गलोर (मैसूर)	१२।१८	०।४३।३०
बण्टवाल (मद्रास)	१२।५३	१।१९। ०
बदायूँ	२८।१०	०।४८।०
बम्बई	१८।५५	१।४१।४०
बरवानी(सी०आई०)	२२।३	१।२०।३०
बरसी (बम्बई)	१८।१३	१।१२।४०
बरार (सी० पी०)	२१।०	१। ०।०
बरडी (सी०आई०)	२४।३०	०। ५।४०
बरोच (बम्बई)	२१।४५	१।४०।०
बरौदा (बम्बई)	२२।०	१।३५।०
बरेली (यू० पी०)	२८।२२	०।३५।०
बलतिस्तान(काश्मीर)	३५।३०	१।१०।०
बलरामपुर	२७।२७	०। ८।०
बलोत्तरी(राजपुताना)	२५।४९	१।४६।३०
बसाहर (पञ्जाब)	३१।३०	०।४५।०
बसीम (बरार)	२०।६	०।५८।२०
बसेन (बम्बई)	१९।२२	१।४०।४०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरव०
बस्तर (सी० पी०)	१८।३०	०।२०।०
बस्ती (यू० पी०)	२३।४८	०। ३।०
बहराइच (यू० पी०)	२७।३४	०।१५।०
बहावलपुर (पञ्जाब)	२९।२४	१।५२।०
बादनूर (सी०पी०)	२१।५४	०।५८।३०
बादुला (लङ्का)	६।५९	०।१९।१०
बाँदा (यू० पी०)	२५।२८	०।२७।०
बाराबङ्की (यू० पी०)	२६।५६	०।१८।०
बारीदोभाव (पञ्जाब)	३०।३२	१।४०।०
बाराँ (राजपुताना)	२५।५	१। ४।३०
बालाघाट (सी० पी०)	२१।५५	०।२७।३०
बालुचिस्तान	२८०	२।०।०
बिजनौर	२९।४०	०।४३।०
बीधमपुर(राजपुताना)	२७।४५	१।४८।२०
बीकानेर (राजपुताना)	२८।१	१।३५।०
बीजापुर (बम्बई)	१९।५०	१।१२।२०
बुरहानपुर (सी०पी०)	२१।१७	०।४७।७
बुलन्दशहर	२८।२४	०।५९।१०
बून्दी (राजपुताना)	२५।२७	१।३।१०
बेलरी (मद्रास)	१५।९	०।११।१०
बेला (यू० पी०)	२५।५६	०। ९।४०
ब्यावर (अजमेर)	२६।६	१।२६।३०
बन्सवारा (राजपुताना)	२३।३०	१।२६।०
भटिन्दा (पञ्जाब)	३०।११	१।२०।०
भण्डारा (सी०पी०)	२१।९	०।३३।०
भदौरा स्टेट(सी०आई)	२४।४८	०।५३।४०
भरतपुर(राजपुताना)	२७।१५	०।५५।०
भावनगर (बम्बई)	२१।४६	१।६८।०
भिलसा (ग्वालियर)	२३।३२	०।५९।३०
भिवानी (पञ्जाब)	२८।४६	१। ६।२०
भीर (हैदराबाद)	१९।०	१।११।४०
भुसावल (बम्बई)	२१।२	१।२२।१०
भूपाल स्टेट	२३।१६	०।५५।०
भेरा (पञ्जाब)	३२।२९	१।४०।३०
भोरस्टेट (बम्बई)	१८।९	१।३।१०
भङ्गलोर (मद्रास)	१२।५२	१।५०।०
मण्डीराज्य (पञ्जाब)	३१।४३	०।५९।०
मथुरा	२७।३२	०।५०।०
मदुरा (मद्रास)	६।५८	०।५०।०
मद्रास	१३।४	०।२८।०
मलकापुर (बरार)	२०।५३	१। ५।१०
महावलीपुर (मद्रास)	१२।३७	०।२२।२०
महेबा (यू० पी०)	२८।१८	०।३९।१०
मानिकपुर (यू०पी०)	२४।४	०।११।५०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरत्व०
मालवा (सी०जाई०)	२३।४०	०।५५।२०
मांडा (सी० पी०)	२२।४३	०।२०।००
मिर्जापुर (यू०पी०)	२५।४	०।४।२०
मुजफरगढ़ (पंजाब)	३०।५	२।५४।२०
मुजफरनगर (यू०पी०)	२९।२८	४।५२।४०
मुगदाबाद (यू०पी०)	२०।५०	०।४२।०
मुल्तान (पंजाब)	३०।१२	२।५५।०
मेरठ	२९।०	०।५३।०
मैनपुरी (यू०पी०)	२७।१४	०।३९।०
मोरवीराज्य (बम्बई)	३२।४९	२।१०।०
रतनगढ़ (बीकानेर)	२८।५	१।२३।३०
रतलामराज्य (C.I.)	२३।३१	१।२०।०
रत्नागिरि (बम्बई)	१७।८	१।३७।०
राजकोट (बम्बई)	२२।१८	२।२।३०
रामनगर (नैनीताल)	२१।२४	०।३८।२०
रानीखेत	२९।४०	०।३४।३०
राजगढ़स्टेट (C.I.)	२४।०	१।५।१०
रामकोला (सी०पी०)	२३।४०	०।१२।०
रामपुर (यू०पी०)	२८।४८	०।४१।०
रामेश्वर	१।४८	०।३७।३०
रायगढ़ (सी०पी०)	२९।०४	०।४।२०
रायपुर (सी०पी०)	२१।१५	०।१३।०
रायबरेली (यू०पी०)	२६।१४	०।१९।२०
रावलपिण्डी (पंजाब)	३३।३७	१।४०।०
राँवा राज्य (C.I.)	२४।३१	०।१७।३
रुर्की (यू०पी०)	२९।५२	०।५१।०
रुहेलखण्ड (यू०पी०)	२८।३२	०।४०।०
रोहतक (पंजाब)	२८।५४	१।५।२०
रुखनऊ (यू०पी०)	२६।५५	०।२०।०
रुलितपुर (यू०पी०)	२४।२२	०।४५।२०
रुक्क (ग्वालियर)	२६।१०	०।४८।२०
रुहाौर (पंजाब)	३१।२७	१।२६।०
रुधियाना (पंजाब)	३०।५५	१।९।३०
रुखसर (राजपुताना)	२४।४३	१।५८।३०
रुक्मनापाली (मद्रास)	१५।१९	०।४७।१०
रुजीराबाद (पंजाब)	३२।२७	१।३०।०
रुद्रीनाथ (यू०पी०)	३०।४४	०।२०।२०
रुन्दरवाला (लंका)	६।५२	०।२०।२०
रुर्धा (सी० पी०)	२०।४५	०।४३।३०
रुविजयानगर (मद्रास)	१५।२०	१।५।०
रुविजयानगरम् (मद्रास)	१८।७	०।४।३०
रुबिमलीपट्टम् (मद्रास)	१७।५३	०।५।०
रुविलासपुर (सी०पी०)	२२।५	०।८।०
रुविलासपुर (बिमला)	३१।१०	१।३।२०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरत्व०
बाहजहांपुर (यू०पी०)	२०।५४	०।३०।४०
बाहाबाद (यू०पी०)	२७।३०	०।२५।२०
बिकारपुर	२७।२७	२।००।०
बिमला सपाट (पंजाब)	३१।५	०।८।१०
श्रीनगर (यू०पी०)	३०।१५	०।४२।०
श्रीनगर (काश्मीर)	३४।५	१।००।४०
श्रीरङ्गम् (मद्रास)	१०।५२	०।४।४०
श्रीरङ्गपट्टम् (मैसूर)	१०।२५	१।३।०
सरदारशहर (बीकानेर)	२८।२७	१।३२।०
सवाईमाधोपुर (जैपुर)	२५।५८	१।५।०
सहारनपुर (यू० पी०)	२९।५८	१।५४।०
सागर (सी०पी०)	२३।५०	१।०।०
सारनगढ़ (सी०पी०)	२।३६	०।१।१०
सिताराम	१७।५२	१।३०।०
सिकन्दराबाद (हैदराबाद)	१५।२७	०।३५।२०
सियालकोट (पंजाब)	३०।३१	१।५४।०
सिरोंज (राजपुताना)	२४।५	०।५।१०
सिलोन	८।०	०।२०।०
सिरोहीराज्य (राजपुताना)	२५।५३	१।४१।०
सिहोरा	२३।३२	१।०।०
सीतापुर (यू०पी०)	२७।३२	०।२४।२०
सुल्तानपुर (यू०पी०)	२६।१६	०।१४।०
सुरतगढ़ (बीकानेर)	२९।१९	१।३।३०
सुरत (बम्बई)	२१।१२	१।३१।०
सैलाना (C.I.)	२३।३१	१।२०।०
सोलापुर (बम्बई)	१७।४०	१।११।०
सोहागपुर (सी०पी०)	२२।४२	०।४७।२०
हमीरपुर (यू०पी०)	२५।५८	०।२८।०
हरदी (सी०पी०)	२२।३१	०।२८।०
हरदोई (यू०पी०)	२७।२३	०।२८।०
हरिहर (मैसूर)	१४।३१	१।११।२०
हरद्वार (यू०पी०)	२९।५८	०।४८।०
हाटा (बम्बई)	२५।४९	२।२१।३०
हातराम (यू०पी०)	२७।३६	०।४८।०
हिन्दूपुर (मद्रास)	१३।४९	०।३४।४०
हिगोली (हैदराबाद)	१९।४३	०।५८।१०
हिसार (पंजाब)	२९।१०	१।१२।२०
हुबली (बम्बई)	१५।२०	१।४८।९
हैदराबाद दक्षिण	१७।२०	०।४९।३०
हैदराबाद सिन्ध	२५।२५	२।२२।३०
होसंगाबाद (सी०पी०)	२२।४६	०।५२।३०
होसियारपुर (पंजाब)	३१।३२	१।१०।३०

अक्षांशपर से सारिणी द्वारा पलभाज्ञान की विधि—

पलभांशतश्चेदधिकं कलाद्यं व्यतीतभोग्याक्षमन्तरदनम् ।

षष्ठ्या हृतं तत्फलयुगता याऽक्षया भवेत्साऽभिपता सुखार्थम् ॥११॥

गत अंश और ऐष्य अंश सम्बन्धि पलभाओं के अन्तर को शेष कला से गुणा कर के ६० का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में यथास्थान जोड़ देने से अभीष्ट पलभा हो जाती है ॥११॥

उदाहरण—

अयोध्या के अक्षांश २६°१४८' पर से पलभाज्ञान करना है तो आगे दी हुई पलभा सारिणी में २६ अक्षांश का फल ६।६१।७ एवं २७ अक्षांश सम्बन्धी फल ६।६।९० इन दोनों फलों के अन्तर (६।६।९०)—(६।६१।७ = ०।१९।४३ को ४८' से गुणा करके गुणनफल = ४८ (०।१९।४३) = ७९४।२४ में ६० का भाग दिया तो लब्धि = $\frac{७९४।२४}{६०} = १२।२४ =$ आई । इसको गतांश सम्बन्धी पलभा ६।६१।७ में जोड़ा दिया तो स्वल्पान्तर से (६।३।४१) = ६।४ अयोध्या की अङ्गुलात्मिका पलभा हुई । इसी को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं ।

पलभासारिणी—

अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा
१	०।१२।३४	१५	३।१२।५४	२९	६।३९।४	४३	१।१।१।२४
२	०।२५।९	१६	३।२६।२४	३०	६।५५।४१	४४	१।३।५।२४
३	०।३७।४४	१७	३।४०।५	३१	७।१२।३६	४५	१।२।०।०
४	०।५०।२१	१८	३।५३।६	३२	७।२९।५३	४६	१।२।५।३७
५	१।३।०	१९	४।७।५५	३३	७।४७।३१	४७	१।२।५।२।४
६	१।१५।१४	२०	४।२२।१	३४	८।५।३८	४८	१।३।१।९।३४
७	१।२८।२३	२१	४।३६।२२	३५	८।२४।७	४९	१।३।४।८।१८
८	१।४१।१०	२२	४।५०।५३	३६	८।४३।५	५०	१।४।१।८।३
९	१।५४।०	२३	५।५।३८	३७	९।२।२५	५१	१।४।४।९।८
१०	२।६।५४	२४	५।२०।३१	३८	९।२२।३०	५२	१।५।२।१।३२
११	२।१९।५५	२५	५।३२।४२	३९	९।४३।१	५३	१।५।५।५।३०
१२	२।३३।०	२६	५।५१।७	४०	१०।३।३६	५४	१।६।३।१।१
१३	२।४६।४१	२७	६।६।५०	४१	१०।२।८।४८	५५	१।७।८।३४
१४	२।५९।२८	२८	६।२२।४८	४२	१०।४।८।१८		

लङ्कोदय पर से स्वोदयज्ञान (करणकुतूहले)—

लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्ता गोङ्काश्विनो रापरदा विनाड्यः ।

क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥

मेषादिषण्णामुदयाः स्वदेशे तुलादितोऽपी च षडुत्क्रमस्थाः ॥१२॥

२७८ पल मेष का, २९९ पल वृष का, ३२३ पल मिथुन का क्रमसे

लङ्घोद्यमान होता है । एवं उत्क्रमसे ३२० पल कर्क का, २९९ पल सिंहका, २७८ पल कन्या का लङ्घोद्यमान होता है । यही उत्क्रम से तुलादि ६ राशियों का मान भी होता है । इन मेषादि के लङ्घोद्यमानों को क्रम तथा उत्क्रम से रखके उनके मानने मेषादि के चरखण्डों को उली रीति (क्रम तथा उत्क्रम) से रख के पहले ३ स्थानों में बटा देने से फिर ३ स्थानों में जोड़ देने से मेषादि ६ राशियों का स्वोद्यमान हो जाता है । उन्हीं को उलटे तुलादि ६ राशियों का मान समझना चाहिये ।

आजमगढ़ का उद्यमान—

लङ्घोद्य चर

२७८—५८=२२० मेष, मीन

२९९—४७=२५२ वृष, कुंभ

३२३—१९=३०४ मिथुन, मकर

३२३+१९=३४२ कर्क, धन

२९९+४७=३४६ सिंह, वृश्चिक

२७८+५८=३३६ कन्या, तुला

अत एव मदीयं पद्यम्—

शून्याश्चिदस्त्रा यमव्राणदस्त्रा वेदाभ्ररामा यमवेदरामाः ।

तर्काब्धिरामा रसरामरामा मेषादितस्तौलित उत्क्रमात्स्युः ॥१२॥

अयनांश बनाने की रीति—

भूनेत्रवेदो ४२१ नशकः स्वदशांशविहीनितः ।

षष्ट्या भक्तोऽयनांशाः स्युर्वर्षारम्भे स्फुटाः खलुं ॥१३॥

त्रिगार्कराशिना स्वार्थयुक्तेन विकलादिना ।

युक्तास्तात्कालिकास्ते स्युः स्पष्टा गणितविद्वर ॥ १४ ॥

वर्तमान शकाब्द में ४२१ घटा के जो शेष बचे उस (शेष) का दशांश भाग उसी में बटा कर ६० का भाग देने से लब्धि वर्षारम्भकालीन (मेष संक्रान्ति के दिन का) स्पष्ट अयनांश होता है ।

यदि सूर्य की राशियां भी बीत गयी हों तो राशि संख्या को ३ से गुणा करके उसमें उसी का आधा जोड़ने से जो विकला हो उसको वर्षारम्भकालीन स्पष्टायनांश की विकला में जोड़ देने से तात्कालिक स्पष्टायनांश हो जाता है ॥ १३-१४ ॥

उदाहरण—

वर्तमान शकाब्द* १८९९ में ४२१ घटाया तो १४३४ शेष बचा । इस १४३४ में इसी १४३४ का दशांश = $\frac{१४३४}{१०} = १४३।२४$ घटा के ६० का भाग दिया तो

* सौरात्मक शकाब्द मेषसंक्रान्ति से प्रारम्भ होगा । अतःगत शकाब्द से ही अयनांश का उदाहरण दिया गया है । इसी भाँति सर्वत्र चन्द्रवत्सरारम्भ हो जाने पर सौरवत्सरारम्भ से पूर्व का शकाल हो तो करना चाहिये ।

$$\text{लब्धि} = \frac{१४३४ - (१४३४.२)}{३०} = \frac{१२९०.३६}{३०} = २१^{\circ} ३०' ३६'' \text{ शकारम्भकाल का}$$

स्पष्ट अयनांश हुआ ।

अब स्पष्ट सूर्य ११।२०।५०/१०'' को राशि संख्या १ को ३ से गुणा कर दिया तो $३ \times ११ = ३३$ हुआ । इन ३३ में इसीका आधा $\frac{३३}{२} = १७$ जोड़ दिया तो ५० विकला हुई । इस ५० विकला को वर्षारम्भकालीनस्पष्टायनांश $२१^{\circ} ३०' ३६''$ में यथा स्थान जोड़ दिया तो तात्कालिकस्पष्टायनांश $२१^{\circ} ३१' २६''$ हुआ ।

अयनांश बनाने की दूसरी रीति—

भूने ऋदोनशकस्त्रिभ्रः खाभ्राशिवभिहेतः ।

वर्षारम्भेऽयनांशाः स्युः स्फुटा गणित भोविद ॥

भागीकृतो भगो भक्तः खाभ्रवेदैः फलं भवेत् ।

कलाद्यं तेन संयुक्ताः स्फुटास्तात्कालिकाः स्मृताः ॥

दूसरी रीति के अनुसार उदाहरण—

शक संख्या १८५५ में ३२२ घटाया तो १४३४ शेष हुआ । इस १४३४ को ३ से गुणा करके २०० से भाग दिया तो लब्धि $= \frac{१४३४ \times ३}{२००} = २१^{\circ} ३०' ३६''$

शकारम्भकाल का स्पष्टायनांश हुआ । अब स्पष्ट सूर्य ११।२०।५० का अंश ३५२ बनाके ४०० का भाग दे दिया तो लब्धि $= \frac{३५२}{४००} = ०' ५३''$ कलादि हुई । इस $०' ५३''$ को वर्षारम्भकालिकस्पष्टायनांश में यथा स्थान जोड़ दिया तो $२१^{\circ} ३०' ३६'' + ०' ५३'' = २१^{\circ} ३१' २९''$ तात्कालिकस्पष्टायनांश* हुआ ।

लग्न स्पष्ट करने की रीति—

तात्कालिकः सायनभागसूर्यः कार्यस्तथा तद्गतभोग्यभागाः ।

स्वीयोदयघ्ना विहृताः खरामैर्लब्धं विशोध्यं घटिकापलेभ्यः ॥१५॥

यातैष्यकान् राशुदयान् ततश्च शेषं वियद्राम३०गुणं विभक्तम् ।

अशुद्धराशेरुदयेन, लब्धमशुद्धशुद्धाऽजमुखेषु भेषु ॥

हीनं युतं तद्धि भवेद्विलयं स्पष्टं स्वदेशेऽयनभागहीनम् ॥ १६ ॥

जिम्न समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्पष्ट सूर्य में तात्कालिक स्पष्टायनांश जोड़ देने से तात्कालिक सायनार्क होता है । उस तात्कालिक सायनार्क के भुक्त या भोग्य अंशादि को स्वदेशीय उदयमान से गुणा करके ३० से भाग देने पर लब्ध पलादि भुक्त या भोग्य काल होता है । (अर्थात् भुक्तांश को स्वोदयमान से गुणा करके ३० से भाग देने पर भुक्तकाल और भोग्यांश को स्वोदय से गुणा करके ३० से भाग देने पर भोग्यकाल होता है) । इस भुक्त या भोग्य काल को इष्ट घटो पल में घटा के जो शेष बचे उसमें भुक्त या भोग्य राशियों के उदयमानों को (जहाँ तक घट सके)

* पहले अयनांश से यह भिन्न इसलिये है कि इसमें अंश सम्बन्धी फल भी ले लिया गया है ।

घटाना (अर्थात् यदि भुक्तांश पर से लग्न स्पष्ट करना हो तो सावनेष्ट काल का ६० में घटा के जो शेष घटा पल हो उसमें भुक्त काल घटा के शेष में गत राशुदय मानों का घटाना । यदि भोग्यांश पर से लग्न साधन करना हो तो सावनेष्ट घटी पल में हा भोग्यकाल घटा के शेष में ऐष्य राशुदय मानों का घटाना) चाहिये । अब शेष को ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान से भाग देने पर जो लब्धि अंशादिक आवे उसको क्रमसे अशुद्धराशि में घटाने और शुद्ध राशि में जोड़ने से (अर्थात् भुक्त क्रिया में अशुद्धराशि-संख्या में घटाने और भोग्य क्रिया में शुद्धराशिसंख्या में जोड़ने से) लायन स्पष्ट लग्न होता है । इसमें अयनांश घटा देने से अपने २ देश का स्पष्ट लग्न हो जाता है ॥ १५-१६ ॥

उदाहरण—

$$\text{तत्कालिक स्पष्टसूर्य} = ११२०^{\circ} १५८' १०''$$

$$,, \text{ अयनांश} = २१^{\circ} ३१' १०''$$

$$,, \text{ सायनार्क} = ०१२^{\circ} १२९' १२''$$

भोग्यांश = १७१३०३१ इस को मेष के २२० उदयमान से गुणा करके ३० का भाग देने पर

$$\text{लब्धि} = \frac{(१७१३०३१) २२०}{३०}$$

$$= \frac{३७४०१६६००१६८२०}{३०}$$

$$= \frac{३८९११९३१४०}{३०} = १२८१२३।४७।२० \text{ इस लब्धि}$$

को हट घटी पल (१३।५५)६० = ८३५ में घटाने से

$$\text{शेष} = ८३५ - (१२८१२३।४७।२०)$$

$$= १५०।३६।१२।४० \text{ इस में वृष जैन सिधुन का}$$

मान (२५२ + ३०४ = ५५६) घटाने पर

$$\text{शेष} = ७०६।३६।१२।४० - ५५६$$

$$= १५०।३६।१२।४०$$

इसको ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान ३४२ से भाग देने पर

$$\text{लब्धि} = \frac{(१५०।३६।१२।४०) ३०}{३४२}$$

$$= \frac{४५१८।६।२०}{३४२} = १३^{\circ} १२' ३९'' \text{ हुई ।}$$

इसको शुद्धराशिसंख्या ३ में जोड़ दिया तो—

$$\text{सायन स्पष्ट लग्न} = ३।१३।१२।३९ \text{ हुआ ।}$$

$$\text{अयनांश घटाया तो स्पष्ट लग्न} = ३।१३^{\circ} १२' ३९'' - २१^{\circ} ३१' १०''$$

$$= ३।२१^{\circ} ४१' १०'' \text{ हो गया ।}$$

भुक्तांश पर से स्पष्टलग्न बनाने का उदाहरण—

$$\text{सायनार्क} = ०१२^{\circ} १२९' १२''$$

$$\text{भुक्तांश} \times \text{स्वोदय} = \frac{(१२^{\circ} १२९' १२'') २२०}{३०}$$

$$= \frac{२६४०१६३८०१६३८०}{३०}$$

$$= \frac{२७४८१६३८०}{३०} = ९१३६१२१४०$$

इष्ट लगे पल ६०—(१३।०९)=४६.०=२७३६ पल में घटाने से—

$$\text{शेष} = २.०६९ - (९१।३६।१२।४०)$$

= २६७३।२३।४७।२० इसमें उल्टे मीन से लेकर

सिंह तक का मास २४८२ घटाने पर

$$\text{शेष} = २६७३।२३।४७।२० - २४८२$$

$$= १९१।२३।४७।२०$$

इस शेष को ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान ३४२ से भाग देने पर

$$\text{लब्धि} = \frac{(१९१।२३।४७।२०) ३०}{३४२}$$

$$= \frac{६७४१।६३।४०}{३४२} = १६०।४७।२१'' \text{ इसको}$$

अशुद्धराशिसंख्या ४ में घटा देने पर शेष—

$$\text{सायनलग्न} = ४ - (१६०।४७।२१'')$$

$$= ३।१३०।१२।३९''$$

$$\text{स्पष्टलग्न} = \text{सायनलग्न} - \text{अयनांश}$$

$$= ३।१३०।१२।३९'' - २१०।३१।२९''$$

$$= २।२१०।४१।१०'' \text{ हुआ।}$$

भुक्त भोग्याल्पत्व में विशेष —

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न विशुद्ध्येद्यदा तदा ।

स्वेष्टं त्रिंशद्गुणं स्वीयोदयाप्तं यल्लवादिकम् ॥

हीनं युक्तं रवौ कार्यं लग्नं तात्कालिकं भवेत् ॥ १७ ॥

यदि भुक्त या भोग्य पलादि इष्ट घटी पल में न घटे तो इष्ट पलादि को ३० से गुणा करके स्वेद्य मान से भाग देने से जो लब्धि अंशादि आवे उसको (भुक्तांश पर से लग्न साधन किया जाता हो तो) स्पष्ट सूर्य में घटा देने से (यदि भोग्यांशपर से लग्न स्पष्ट किया जाता हो तो) स्पष्ट सूर्य में जोड़ देने से तात्कालिक स्पष्ट लग्न हो जाता है ॥ १७ ॥

उदाहरण—

$$\text{कल्पित सायन सूर्य} = ०।१२०।१७।३९''$$

$$\text{भोग्यांश} = १७०।४२।२६''$$

$$\text{भोग्यकाल} = \frac{(१७०।४२।२६'') २२०}{३०}$$

$$= \frac{३८९५।३१।४०}{३०} = १२९।९१।३।२०$$

यह पलादि भोग्यकाल कल्पित इष्ट घटी पल १।४६ (= १.०६ पल) में नहीं घटता

इस लिये इष्ट घटीपल = १०५ को ३० से गुणा करके स्वोदयमान=२२० से भाग देनेपर

$$\text{लब्धि} = \frac{१०५ \times ३०}{२२०} = \frac{१०५ \times ३}{२२} = \frac{३१५}{२२} = १४^{\circ} १९' १५'' \text{ अंशादि}$$

हुई। इस अंशादिको स्पष्ट सूर्य=११२०° ०१' ४६'' में जोड़ दिया तो राश्यादि स्पष्ट लग्न—
 $११२०^{\circ} १४६' १६'' + १४^{\circ} १९' १५'' = ०१५^{\circ} १९' ११''$ हुआ ।

क प्रकार के उदाहरण के लिये २० वें श्लोक के दशम साधन का उदाहरण देखिये ।
 काशी में तथा २५° १४' अक्षांशदेशों में केवल सारणी ही पर से पूज्य-
 याद परमगुरुवर्य म०म०पं० श्रीसुधाकरद्विवेदाकृत स्पष्ट लग्न साधनकी रीति-

दृश्यनूर्यवशतो घटीपलं यत्तदीष्टमदितं तदुद्धवम् ।

भादिकं त्वयनभागहीनितं चन्द्रचूडनगरे भवेत्तनुः ॥१८॥

सायनार्क के राशि-अंश के सामने के कोठे में जा घटीपल हो एवं कला विकला सारणी में जो पलादि हो उनको यथास्थान (एक एक स्थान हटा कर) जोड़ देने से जो घटी पल विपलादि हो उसमें इष्टकाळ के घटीपलादि को जोड़ देने से जितना घटीपलादि हा उतने घट्यादि में अंश सारणी में जिस राशि अंश के सामने का घट्यादि घट जाय उतने अंश लग्न के बीते हुए होते हैं । पुनः घटाने पर जो पलादि शेष बचे उनमें कला सारणीमें जिस राशिकला के सामने का पलादि घट जाय उतनी कला लग्न को बीती हुई होती है । एवं विकला का ज्ञान भी करके सर्वों (अंश, कला, विकला) को अपने २ स्थान में रखके जोड़ देने से राश्यादि सायनस्फुट लग्न होता है । इसमें अयनांश घटा देने से स्पष्ट लग्न काशी में होजाता है ॥ १८ ॥

उदाहरण—

स्पष्ट सूर्य ११२०° १५८' १०'' और स्पष्ट अयनांश २१° ३९' २९'' दोनों को यथा स्थान जोड़ दिया तो सायनसूर्य हांगया ०१२२° २९' २९'' । अब सायन सूर्य के सामने का

राशिअंश का बज्यादि =	११२०' १२०
राशिकला का पलादि =	३१३९' ३४
राशिविकला का विपलादि =	३१३९' ३४
योग =	११३२' ५१। ९१३४
इसमें इष्ट घटी	= १३' ५५

जोड़ दिया तो योग = ११५२' ०१' ५१।३४ हुआ । अब इस में कर्क के १२° के सामने का घटी पल (१५१' ६१।०) घट गया तो शेष पलादि ११५९' १९।३४ बचा । फिर इस पलादि में राशिकलासारिणीमें ५० कला सम्बन्धी पलादि ९१४९।२० घटाया तो शेष विपलादि १२४९।३४ बचा । फिर इसमें राशिविकला सारणी में ९ विकला के सामने का विपलादि ११४२।० घट गया तो शेष ७१३४ प्रतिविपल बचा । इस को स्वल्पान्तर से छाड़ दिया । अब सारणी में १२° ५२' १५'' के सामने के फल घट गये हैं इस लिये सायनलग्न ३११०° ५२' १५'' हुआ इसमें अयनांश घटा दिया तो काशी का स्पष्टलग्न ३११२° ५२' १५'' — (२१° ३९' २९'') = २१२१° १२' ५०'' होगया ।

* स्वल्पान्तर से यही काशी का स्पष्ट सूर्य मान लिया गया है ।

कला-विकला फल

शेष ०	मीन ११	वृष १	कुम्भ १०	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	वृश्चिक ७	तुला ६
१	० ७ २६	० ८ ३०	० ९ ३०	० १० ३०	० ११ ३०	० १२ ३०	० १३ ३०	० १४ ३०
२	० १४ ५२	० १५ ३०	० १६ ३०	० १७ ३०	० १८ ३०	० १९ ३०	० २० ३०	० २१ ३०
३	० २१ १८	० २२ १०	० २३ १०	० २४ १०	० २५ १०	० २६ १०	० २७ १०	० २८ १०
४	० २८ ४४	० २९ ३०	० ३० ३०	० ३१ ३०	० ३२ ३०	० ३३ ३०	० ३४ ३०	० ३५ ३०
५	० ३५ १०	० ३६ १०	० ३७ १०	० ३८ १०	० ३९ १०	० ४० १०	० ४१ १०	० ४२ १०
६	० ४२ ३६	० ४३ ३०	० ४४ ३०	० ४५ ३०	० ४६ ३०	० ४७ ३०	० ४८ ३०	० ४९ ३०
७	० ४९ ०२	० ५० ०२	० ५१ ०२	० ५२ ०२	० ५३ ०२	० ५४ ०२	० ५५ ०२	० ५६ ०२
८	० ५६ २८	० ५७ २८	० ५८ २८	० ५९ २८	० ६० २८	० ६१ २८	० ६२ २८	० ६३ २८
९	० ६३ ५४	० ६४ ५४	० ६५ ५४	० ६६ ५४	० ६७ ५४	० ६८ ५४	० ६९ ५४	० ७० ५४
१०	० ७० २०	० ७१ २०	० ७२ २०	० ७३ २०	० ७४ २०	० ७५ २०	० ७६ २०	० ७७ २०
११	० ७७ ४६	० ७८ ४६	० ७९ ४६	० ८० ४६	० ८१ ४६	० ८२ ४६	० ८३ ४६	० ८४ ४६
१२	० ८४ १२	० ८५ १२	० ८६ १२	० ८७ १२	० ८८ १२	० ८९ १२	० ९० १२	० ९१ १२
१३	० ९१ ३८	० ९२ ३८	० ९३ ३८	० ९४ ३८	० ९५ ३८	० ९६ ३८	० ९७ ३८	० ९८ ३८
१४	० ९८ ०४	० ९९ ०४	० १०० ०४	० १०१ ०४	० १०२ ०४	० १०३ ०४	० १०४ ०४	० १०५ ०४
१५	० १०५ ३०	० १०६ ३०	० १०७ ३०	० १०८ ३०	० १०९ ३०	० ११० ३०	० १११ ३०	० ११२ ३०
१६	० ११२ ५६	० ११३ ५६	० ११४ ५६	० ११५ ५६	० ११६ ५६	० ११७ ५६	० ११८ ५६	० ११९ ५६
१७	० ११९ २२	० १२० २२	० १२१ २२	० १२२ २२	० १२३ २२	० १२४ २२	० १२५ २२	० १२६ २२
१८	० १२६ ४८	० १२७ ४८	० १२८ ४८	० १२९ ४८	० १३० ४८	० १३१ ४८	० १३२ ४८	० १३३ ४८
१९	० १३३ १४	० १३४ १४	० १३५ १४	० १३६ १४	० १३७ १४	० १३८ १४	० १३९ १४	० १४० १४
२०	० १४० ४०	० १४१ ४०	० १४२ ४०	० १४३ ४०	० १४४ ४०	० १४५ ४०	० १४६ ४०	० १४७ ४०
२१	० १४७ ०६	० १४८ ०६	० १४९ ०६	० १५० ०६	० १५१ ०६	० १५२ ०६	० १५३ ०६	० १५४ ०६
२२	० १५४ ३२	० १५५ ३२	० १५६ ३२	० १५७ ३२	० १५८ ३२	० १५९ ३२	० १६० ३२	० १६१ ३२
२३	० १६१ ५८	० १६२ ५८	० १६३ ५८	० १६४ ५८	० १६५ ५८	० १६६ ५८	० १६७ ५८	० १६८ ५८
२४	० १६८ २४	० १६९ २४	० १७० २४	० १७१ २४	० १७२ २४	० १७३ २४	० १७४ २४	० १७५ २४
२५	० १७५ ५०	० १७६ ५०	० १७७ ५०	० १७८ ५०	० १७९ ५०	० १८० ५०	० १८१ ५०	० १८२ ५०
२६	० १८२ १६	० १८३ १६	० १८४ १६	० १८५ १६	० १८६ १६	० १८७ १६	० १८८ १६	० १८९ १६
२७	० १८९ ४२	० १९० ४२	० १९१ ४२	० १९२ ४२	० १९३ ४२	० १९४ ४२	० १९५ ४२	० १९६ ४२
२८	० १९६ ०८	० १९७ ०८	० १९८ ०८	० १९९ ०८	० २०० ०८	० २०१ ०८	० २०२ ०८	० २०३ ०८
२९	० २०३ ३४	० २०४ ३४	० २०५ ३४	० २०६ ३४	० २०७ ३४	० २०८ ३४	० २०९ ३४	० २१० ३४
३०	० २१० ६०	० २११ ६०	० २१२ ६०	० २१३ ६०	० २१४ ६०	० २१५ ६०	० २१६ ६०	० २१७ ६०

कला-विकला फल

मेघ	०	मीन	११	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०							
वृष	१	कुम्भ	१०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
मिथुन	२	मकर	९	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	
कर्क	३	धनु	८	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	
सिंह	४	शुक्रिक	७	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	
कन्या	५	तुला	६	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	

नतोन्नतज्ञान—

तदुन्नतं यदल्पं स्याद्द्युनिशागतशेषयोः ।

तेनोनितं दिननिशोरद्धं तन्नतसंज्ञकम् ॥ १९ ॥

दिन रात्रि दोनों की गतघटी और शेषघटी इन दोनों में जो अल्प (कम) हो उसको उन्नतकाल कहते हैं । उस उन्नतकाल को दिनदल या रात्रिदल में घटा देने से शेष नतकाल होता है ॥ १९ ॥

उदाहरण—

सावन इष्टकाल १३।५५ और दिनमान ३०।५० है । यहाँ दिनशेष १६।५५ से दिनगत १३।५५ कम है । इसलिये दिनगत ही उन्नतकाल हुआ । इसको दिनदल १५।२५ में घटा दिया तो शेष १५।२५ - (१३।५५) = १।३० दिन का बक्यादि पूर्वनत काल हुआ ।

दशमसाधन की रीति—

पञ्चीकृतात्पूर्वपश्चान्ताल्लङ्कोदयैश्च यत् ।

भुक्तभोग्यप्रकारेण लग्नं तदशपाभिधम् ॥

नतश्चतुर्थं विज्ञेयं मध्ये षड्भाधिके कृते ॥ २० ॥

पूर्व नत हो तो लङ्कोदय पर से भुक्त प्रकार द्वारा तथा परनत हो तो लङ्कोदय पर से भोग्य प्रकार द्वारा पूर्ववत् लग्न साधन करना, तो वही दशमलग्न होगा । उसमें ६ राशि जोड़ देने से चतुर्थ भाव हो जाता है । (यदि रात्रि का नतकाल हो तो सूर्य में ६ राशि जोड़ के शेष क्रिया पूर्ववत् करनी चाहिये) ॥ २० ॥

उदाहरण—

$$\text{सायनसूर्य} = ०।१२०।२९/२९''$$

$$\text{भुक्तांश} = १२०।२९/२९''$$

$$\frac{\text{भुक्तांश} \times \text{लङ्कोदय}}{३०} = \frac{(१२।२९।२९) २७८}{३०}$$

$$= \frac{३४७२।३६।२२}{३०} = ११५।४५।१२।४४$$

यह पलादि भुक्तकाल पूर्वनतपल ९० में नहीं घटता इस लिये १७ वें श्लोक के अनुसार नतपल ९० को ३० से गुणा करके मेष के लङ्कोदयमान २७८ से भाग देने पर लब्धि = $\frac{९० \times ३०}{२७८} = ९।४२।४४।$ अंशादि हुई । इसको स्पष्ट सूर्य में घटाया तो दशम लग्न स्पष्ट = $११।२०।५८।१०'' - ९।४२।४४''$
= $११।११।१५।१६''$ हुआ ।

सब देशों के लिये केवल सारणी पर से दशमलग्न साधन की रीति—

दृश्यार्काद्धटिकाद्यं यत्पूर्वापरनतोनयुक् ।

तज्जं भाद्यं चलांशोन स्वभं सार्वत्रिकं भवेत् ॥ २१ ॥

दृश्य सूर्य (सायन सूर्य) के राशि-अंश के सामने के कोठे में जितना घटी पल हा उसको एक स्थान में रखके, त्रैराशिक गणित द्वारा कला विकला सम्बन्धी पल का आनयन करके पूर्व स्थापित घटा पल में यथा स्थान रख कर जोड़ देवे । उसमें यदि पूर्वतत हो ता नतकाल को घटाके परतत हो तो जोड़ के जो घट्यादि प्राप्त हो उसमें आरणी में लिखित जिन राशि-अंश के सामने का घटी पल घट जाय उतने राशि अंश दशमलन कं गू ह ते हैं । फिर घटाने पर जो शेष बचे उस पर से त्रैराशिक गणित द्वारा कला विकला का आनयन करके यथा स्थान पूर्व प्राप्त राशि अंश में जोड़ देने से सायन दशम लग्न होता है । उसमें अयनांश घटा देने पर सब देशों के के लिये दशम लग्न स्पष्ट हो जाता है ॥ २१ ॥

उदाहरण—

सायन सूर्य ०१२२°१२९'१२९" के राशि और अंश के सामने के घट्यादिफल ११९११२ में त्रैराशिकगणितद्वारा आनीत कलाविकलासम्बन्धी पलादि फल

$$= \frac{(पलादि = ९११६) (०९'१२९")}{६०'}$$

$$= \frac{(९११६) १७६९"}{३६००"}$$

$$= \frac{१६३९२।४४}{३६००"} = ४।३३।१०।४४ को यथा स्थान रख कर जोड़ दिया .$$

११९११२

४।३३।१२।४४

तो सायन सूर्य के राश्यादि सम्बन्धी घट्यादि फल = ११९०।४९।१२।४४ हुआ ।

इस में घट्यादि पूर्वतत को घटाया तो शेष = (११९०।४९।१२।४४) - (१।३०)

= ०।२९।४९।१२।४४ बचा ।

इस में ० राशि २ अंश के सामने का घट्यादि = ०।१८।३२ घटता है । अतः ० राशि २ अंश सायन दशम हुआ । और घटाने पर—

०।२९।४९।१२।४४

०।१८।३२

०।१३।१२।४४ पलादि शेष बँचा ।

फिर इसपर से त्रैराशिक गणित द्वारा जो कलादि फल = $\frac{६०'(०।१३।१२।४४)}{९११६}$

$$= \frac{२९९९२।४४}{९९६} = ४६'।४९"$$

आया उस को राश्यादि सायन दशम के आगे यथा स्थान रख के अयनांश घटा दिया तो राश्यादि स्पष्ट दशम लग्न = ०।२२'।४६'।४९" - (२१'।३१'।२९")

$$= ११।११'।१९'।१६" हो गया ।$$

सायनांकवश से दशमसारणी

राशि	तुला	वृश्चिक	मिथुन	मकर	कुम्भ	मीन
०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३	३०	३०	३०	३०	३०	३०
४	३०	३०	३०	३०	३०	३०
५	३०	३०	३०	३०	३०	३०
६	३०	३०	३०	३०	३०	३०
७	३०	३०	३०	३०	३०	३०
८	३०	३०	३०	३०	३०	३०
९	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
११	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१२	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१३	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१४	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१५	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१६	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१७	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१८	३०	३०	३०	३०	३०	३०
१९	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२१	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२२	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२३	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२४	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२५	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२६	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२७	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२८	३०	३०	३०	३०	३०	३०
२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

बिना नतकालके ही दशमलग्नसाधन का प्रकार --
 मेषादिशुद्धोदययुक्शेषाच्छोध्या मृगादिकाः ।
 लङ्कोदयास्ततः शेषं वियत्रामैश्च सङ्कु^०म् ॥ २२ ॥
 अशुद्धलङ्कोदयकैर्मक्तं लब्धं लवादिकम् ।
 मेषादिशुद्धमैर्युक्तं चलांशोनं लभं भवेत् ॥ २३ ॥

शेष पलादि में शेष से लेकर शुद्ध राशितक के स्वोदयमानों को जोड़के जितना पलादि हो उसमें मकरादि से लङ्कोदय मानों को जहाँतक घटा जाय घटा देवे जो शेष बचे उसको ३० से गुणा करके अशुद्ध लङ्कोदय मान से भाग देने पर जो अंशादि लब्ध हो उसमें मेषादिशुद्ध लङ्कोदय राशि संख्या को जोड़ के अयनांश घटा देने से स्पष्ट दशमलग्न हो जाता है ॥२२-२३॥

उदाहरण—

१६-१६ वें श्लोक के अनुसार भोग्य प्रकार से आनीत अशुद्ध राशि (कर्क)
 का शेष = १६०।३६।१२।४०

मेष, वृष और मिथुन के स्वोदय पल = २२० + २६२ + ३०४ = ७८६

∴ शेष पलादि + मेष + वृष + मिथुन = (१६०।३६।१२।४०) + ७८६
 = ९२६।३६।१२।४०

इस में मकर, कुम्भ और मीनके लङ्कोदयमानों (३२३ + २९९ + २७८ = ९००)

को घटाने पर शेष = (९२६।३६।१२।४०) - ९००
 = २६।३६।१२।४०

फिर
$$\frac{\text{शेष} \times ३०}{\text{अशुद्धलङ्कोदयमान}} = \frac{(२६।३६।१२।४०) ३०}{२७८}$$

= $\frac{७९८।६।२०}{२७८}$

= २°।५२'।१५''

फिर शुद्धराशिसंख्या + लब्धांशादि = ०।२°।५२'।१५''

अयनांश = २१°।३१'।२९''

घटाया तो स्पष्टदशम = ११।११°।२०'।४६'' हुआ ।

१२ भाव साधन —

अथ लग्नोनतुर्यस्य षष्ठांशेन युतं तनुः ।

सन्धिः स्यादेवमग्रेऽपि षष्ठांशस्यैव योजनात् ॥ २४ ॥

त्रयः ससन्धयो भावाः षष्ठांशोनैकयुक्सुखात् ।

अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्द्युक्ताः परेऽपि षट् ॥ २५ ॥

चतुर्थ भाव में लग्न को घटाने पर जो शेष बचे उसमें ६ का भाग देना

लब्ध जो अंशादि आवे उसको लग्न में जोड़ देने से लग्न की सन्धि होती है । एवं षष्ठांश को तनुसन्धि में जोड़ देने से द्वितीयभाव; द्वितीयभाव में उसी षष्ठांश की जोड़ने से द्वितीयभाव की सन्धि होती है । एवं आगे भी इसी क्रम से उसी षष्ठांश को जोड़ देने से सन्धि समेत ३ भाव हो जाते हैं । उसी षष्ठांश को एक राशि में घटा कर जो शेष बचे उसको चतुर्थ भाव से आगे क्रमसे जोड़ने से आगे के भी सन्धिसहित ३ भाव बन जाते हैं । एवं इन्हीं ६ भावों में ६, ३ राशि जोड़ देने से शेष भी (सप्तम भाव से लेकर द्वादशभाव पर्यन्त) ६ भाव बन जाते हैं ॥ २३-२५ ॥

उदाहरण—

चतुर्थ भाव ९ । ११° । १९' । १६" में लग्न २ । २१° । ४१' । १०" को षष्ठांश के शेष में ६ का भाग देने से

$$\begin{aligned} \text{लब्ध अंशादि} &= \frac{(९।११°।१९'।१६'') - (२।२१°।४१'।१०'')}{६} \\ &= \frac{२।१९°।३४'।६''}{६} = १।३१°।४१'' \text{ षष्ठांश हुआ।} \end{aligned}$$

इस षष्ठांश को उपर्युक्त नियम से जोड़ दिया तो १२ भाव होगये ।

१२ भाव—

प्रथम	सं०	द्वितीय	सं०	तृतीय	सं०	चतुर्थ	सं०	पञ्चम	सं०	षष्ठ	सं०
२	३	३	४	४	४	५	२	६	७	७	८
२१	४	१८	१	१४	२७	११	२७	१४	१	१८	४
४१	५६	१२	२८	४३	५९	१५	५९	४३	२८	१२	५६
१०	५१	३२	०३	५४	३५	१६	३५	५४	१३	३२	५१
सप्तम	सं०	अष्टम	सं०	नवम	सं०	दशम	सं०	एकाद.	सं०	द्वादश	सं०
८	९	९	१०	१०	१०	११	११	०	१	१	२
२१	४	१८	१	१४	२७	११	२७	१४	१	१८	४
४१	५६	१२	२८	४३	५९	१५	५९	४३	२८	१२	५६
१०	५१	३२	१३	५४	३५	१६	३५	५४	१३	३२	५१

विशेष (श्रीपतिपद्धति से)—

वदन्ति भावैक्यदलं हि सन्धिस्तत्र स्थितः स्यादफलो ग्रहेन्द्रः ।
 ऊनस्तु सन्धेगतभावजातानागाभिर्जं चाभ्यधिकः करोति ॥२६॥
 भावांशतुल्यः खलु वर्तमानो भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते ।
 भावोनके वाभ्यधिके च खेटे त्रैराशिकेनाऽत्र फलं प्रकल्प्यम् ॥२७॥

भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृत्तिः पूर्णं फलं भावसंश्लेषु ।

हासक्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशो ऋदितो मुनीन्द्रैः ॥२८॥

जन्मप्रयाणव्रतबन्धचौलनृपाभिषेकादिकरग्रहेषु ।

एवं हि भावाः परिकल्पनीयास्तैरेव योगोत्थफलं प्रकल्पयन् ॥२९॥

दो भावों के योग के आवे का सन्धि कहते हैं । सन्धि में स्थित ग्रह फलदान में समर्थ नहीं होता । सन्धि से कम ग्रह पूर्वभाव का और सन्धि से अधिक ग्रह अग्रिमभाव का फल देता है । भाव के अंश तुल्य ग्रह होतो भाव सम्बन्धी पूर्णफल देता है । भाव से कम या अधिक ग्रह होतो त्रैराशिक गणित द्वारा फल की कल्पना करे । भाव प्रवृत्ति में फलकी प्रवृत्ति और भावकी पूर्णता में फल का पूर्णत्व होता है । एवं हास क्रम से भाव के विराम में फल का अन्त होता है ऐसा मुनियों ने कहा है । जन्म, यात्रा, यज्ञोपवीत, मुण्डन, राज्याभिषेक, विवाह इत्यादि कार्यों में इसी प्रकार भाव साधन करना चाहिये । और इन्हीं भावों पर से योगोत्थफलों का आदेश करना चाहिये ॥ २६-२९ ॥

आज कल के कुछ पण्डितों ने श्रीपतिपद्धति जातकपद्धति (केशवी) इत्यादि बड़े २ प्रामाणिक ग्रन्थों को यवनमतानुवादित ग्रन्थ बतलाते हुए इस भावानयन विधि को अशुद्ध कहना और श्रीपतिमठ, केशवदैवज्ञ, ज्ञानराजदैवज्ञ प्रभृति प्रकाण्ड विद्वानों को ग्रन्थानधिकारी सिद्ध कहते हुए—

‘लग्नमारभ्य सर्वत्र राशिवृद्ध्या यथाक्रमम् ।

भावाः सर्वेऽवगन्तव्याः सन्धी राश्यर्घ्ययोजनात् ॥’

इस स्थूल भावानयन को ही शुद्ध भावानयन बताना आरम्भ कर दिया है । किन्तु ऐसा कहना उन्हीं लोगों को शोभता है । क्योंकि इस स्थूल भावानयन को लिखते हुए शूरमहाठ श्रीशिवराजदैवज्ञ ने अपने ज्योतिर्निबन्ध नामक पुस्तक में स्वयं सुरूपष्ट लिख दिया है—

‘एतत्स्थूलं भावानयनं सुक्ष्मं तु जातकपद्धतेरवगन्तव्यम् ॥’ इति ।

कमलाकर भट्ट ने भी अपनी सिद्धान्ततत्त्वविवेक नाम की पोथी में इस पर विचार किया है । किन्तु उदयान्तर हफुटभोग्यखण्ड इत्यादि की भाँति इसका विचार भी उन्मत्तप्रलापत्र हो गया है । इति दिक् ।

ग्रहों की शयनाद्यवस्था—

खेटर्क्षसंख्या खेटघ्नी खेटांशगुणिता पुनः ।

जन्मर्क्षाङ्गेषुक्ताऽर्कतष्टावस्था क्रमाद्भवेत् ॥ ३० ॥

शयनं चोपवेशं च नेत्रपाणिः प्रकाशनम् ।

गमनागमने चैव सभावसतिरागमः ॥ ३१ ॥

सोदाहरणसटिप्पणहिन्दी टोका सहितः ।

भोजनं नृत्यलिप्सा च कौतुकं निद्रितेति च ।

शेषवर्गं स्वराङ्गाढ्यं भानुना शेषितं ततः ॥ ३२ ॥

भान्वादिषु क्रमात्पञ्चयुग्मनेत्राग्निमायकाः ।

रामरामाब्धिभेदाश्च क्षेप्यास्तष्टास्त्रिभिस्ततः ॥ ३३ ॥

एकादिशेषे खटानामवस्था त्रिविधा भवेत् ।

दृष्टिश्रेष्ठा विचेष्टा च कथिता पूर्वपण्डितैः ॥ ३४ ॥

जिस नक्षत्र पर जो ग्रह स्थित हो उस नक्षत्र की संख्या से उस ग्रह की संख्या को गुणा करके राशि के जितने अंश पर ग्रह बैठा हो उस अंश की संख्या से भी उस गुणनफल को गुणा करे। फिर जन्म नक्षत्र की संख्या, इष्ट काल के गत घटो की संख्या और जन्मलग्न की संख्या इन तीनों के योग को उस गुणनफल में जोड़ के १२ का भाग देने पर एक शेष शेष बचे तो क्रमसे १ शयन, २ उपवेशन, ३ नेत्रपाणि, ४ प्रकाशन, ५ गमन, ६ आगमन, ७ सभावसति, ८ आगम, ९ भोजन, १० नृत्यलिप्सा, ११ कौतुक और १२ निद्रा ये बारह ग्रहों की अवस्थायें होती हैं।

फिर शेष का वर्ग करके (शेष को शेष से गुणा के) प्रसिद्धनाक के *स्वराङ्क को जोड़ के १२ का भाग देना जो शेष बचे उसमें सूर्यके लिये ५, चन्द्रमा और मङ्गल के लिये २, बुध के लिये ३, बृहस्पति के लिये ५, शुक और शनि के लिये ३ एवं राहु और केतु के लिये ४ जोड़ के ३ से भाग देने पर १ शेष बचे तो दृष्टि, २ शेष बचे तो चेष्टा और ३ शेष बचे तो विचेष्टा नामकी विशेष अवस्था भी होती है। ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ ३०-३४ ॥

उदाहरण—

*रेवती नक्षत्र पर सूर्य है तो नक्षत्रसंख्या २७ को ग्रह की संख्या १ से और सूर्याधिष्ठित अंशकी संख्या २१ से गुणाकर दिया तो गुणनफल = $27 \times 1 \times 21 = 567$ हुआ इसमें जन्मनक्षत्र अनुराधा की संख्या १७, इष्टकाल के गत घटो की संख्या १३ और जन्मलग्न की संख्या ३ के योग ($17 + 13 + 3 = 33$) को जोड़ के योगफल = $567 + 33 = 600$ में १२ से भाग दिया तो १२ शेष बचे इसलिये सूर्य की निद्रा अवस्था हुई। फिर शेष १२ का वर्ग $12 \times 12 = 144$ बना के इसमें प्रसिद्धनाक गोविन्दप्रसाद के आद्यक्षर स्वर (ओ) के अङ्क ९ को जोड़ के $144 + 9 = 153$ बारह का भाग दिया तो ९ शेष हुए। फिर इस शेष (९) में सूर्य के क्षेपक ९ को जोड़ के ($9 + 9 = 18$) तीन का भाग दिया तो १ शेष बचा इसलिये सूर्य की निद्रा अवस्था के अन्तर्गत दृष्टि नाम की अवस्था हुई। इसी प्रकार चन्द्रमा इत्यादि की भी अवस्था बनानी चाहिये।

* अ, इ, उ, ए, ओ इन पाँचों स्वरों के क्रमसे १, २, ३, ४, ५ स्वराङ्क होते हैं।

अन्यप्रकार से ग्रहों की अवस्था का ज्ञान—

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः ।
 विकलश्च खलः कोपी नवधा खचरो भवेत् ॥ ३५ ॥
 उच्चस्थः खचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेऽधिमित्रभे ।
 मुदितः मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते ॥ ३६ ॥
 शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः ।
 खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥ ३७ ॥

दीप्त, स्वस्थ, प्रमुदित, शान्त, दीन, अतिदुःखित, विकल, खल, और ६ कोपी ये नव प्रकार के ग्रह होते हैं । अपने उच्च में स्थित ग्रह दीप्त, अपनी राशि में स्वस्थ, अधिमित्र की राशि में मुदित, मित्र की राशि में शान्त, सम की राशि में दीन, शत्रु की राशि में अति दुःखित, पापग्रह-से युक्त रहने पर विकल, पाप ग्रह की राशि में रहने पर खल, और सूर्य के साथ रहने से कोपी ग्रह होता है ॥ ३५-३७ ॥

पञ्चधा मैत्री (सारावली से)—

व्ययाम्बुधनखायेषु तृतीये सुहृदः स्थिताः ।
 तत्कालरिपवः षष्ठसप्ततृकत्रिकोणगाः ॥ ३८ ॥
 हितसमरिपुसंज्ञा ये निसर्गान्निरुक्ता
 हिततमहितमध्यास्तेपि तत्कालखेटैः ।
 रिपुसमसुहृदाख्याः सूतिकाले ग्रहेन्द्रा
 अधिरिपुरिपुमध्याः शत्रुतश्चिन्तनीयाः ॥ ३९ ॥

तत्काल में १२।४।२।१०।११।३ इन स्थानों में रहने वाले ग्रह आपस में मित्र होते हैं । और ६।७।८।१।९।५ इन स्थानों में बैठा हुआ ग्रह शत्रु होता है । जो ग्रह स्वभाव से मित्र, सम अथवा शत्रु हैं वेही यदि तत्काल में मित्र हों तो क्रम से तत्काल में अधिमित्र, मित्र और सम होते हैं । अर्थात् स्वाभाविक मित्र ग्रह तत्काल में भी मित्र हो तो तत्काल में अधिमित्र, स्वाभाविक सम ग्रह यदि तत्काल में मित्र होतो मित्र एवं स्वाभाविक शत्रु ग्रह यदि तत्काल में मित्र हो तो तात्कालिक सम कहा जाता है । एवं जो ग्रह स्वभाव से शत्रु सम या मित्र हैं वे ही यदि तत्काल में शत्रु होजायँ तो क्रम से उन्हें अधिशत्रु, शत्रु और सम समझना चाहिये ॥ ३८-३९ ॥

नैमिगिकमैत्री—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	शु.	श.
मिश्र	चं. मं. वृ.	सू. वृ.	सू. चं. शु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	वृ. श.	वृ. शु.
सम	वृ.	मं. वृ. शु. श.	शु. श.	म. वृ. श.	श.	मं. वृ.	वृ.
शत्रु	शु. श.	•	वृ.	चं.	वृ. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

३ पृष्ठ पर लिखित जन्मकुण्डली के आधार पर तात्कालिक ग्रहमैत्री चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	शु.	श.
तात्कालिक मिश्र	वृ.	वृ. वृ.	वृ. सू. चं.	चं.	सू. चं.	सू. चं.	चं.
तात्कालिक शत्रु	चं. वृ. मं.	सू. मं.	च. वृ.	वृ.	सू. म. वृ.	वृ. वृ.	वृ. वृ.

पञ्चमया ग्रहमैत्रीचक्र—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	शु.	श.
अधिमिश्र	•	वृ.	•	सू.	चं.	•	•
मिश्र	वृ.	वृ. शु. श.	शु. श.	मं.	•	मं.	•
सम	च. मं. वृ. शु. श.	सू.	सू. चं. वृ. वृ.	चं. शु. सू. मं.	सू. चं.	सू. चं. मं.	वृ. शु.
शत्रु	•	मं.	•	वृ. श.	श.	वृ.	वृ.
अधिशत्रु	•	•	•	•	वृ. शु.	•	•

दशवर्ग—

लग्नं होराद्वक्कसप्ताङ्ककाष्टाभास्वान्भूपत्रिंशदभ्राङ्गभागाः ।

दिग्वर्गाख्याः प्रोक्तरीत्या प्रसाध्या होराविज्ञैः प्रस्फुटं सत्फलार्थम् ४०

लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोड-
शांश, त्रिंशांश और षष्ठ्यंश ये दशवर्ग कहे जाते हैं । इनको आगे लिखी
रीति से स्पष्ट करना चाहिये ॥ ४० ॥

राशिस्वामी—

कुजास्यजिष्नेन्दुसूर्यज्ञशुक्रारेज्यसौरिणः।

शनीज्यौ क्रमशोशानां मेषादीनां च स्वामिनः ॥ ४१ ॥

मङ्गल, शुक, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि और गुरु ये ग्रह क्रम से मेषादि १२ राशियों के स्वामी हाते हैं । और मेषादि राशियों के अंशों के भी स्वामी हाते हैं ॥ ४१ ॥

होरे रवीन्द्रोरसमे समे स्तः शशिसूर्ययोः ।

द्रेष्काणेशाः स्वपञ्चाङ्गभेशाः स्युः क्रमशः स्फुटाः ॥ ४२ ॥

विषम राशियों (१।३।५।७।९।११) में पहले १५ अंश तक सूर्यकी फिर १५ अंश चन्द्रमा की एवं सम (२।४।६।८।१०।१२) राशियों में पहले १५ अंश तक चन्द्रमा की फिर १५ अंश सूर्य की होरा होता है ।

किसी भी राशि में पहले द्रेष्काण (१० अंश तक) का स्वामी उसी का स्वामी दूमरे द्रेष्काण (११ अंश से २० अंश तक) का स्वामी उससे पञ्चमेश और तीसरे द्रेष्काण (२१ अंश से ३० अंश तक) का स्वामी उससे नवमेश होता है ॥ ४२ ॥

सप्तमांश—

लग्नादिसप्तमांशेशास्त्वोजे राशौ यथाक्रमम् ।

युग्मे लगे स्वरांशानामधिपाः सप्तमादयः ॥ ४३ ॥

विषम संख्याक (१।३।५।७।९।११) राशियों में उसी राशि से, सम संख्याक (२।४।६।८।१०।१२) राशियों में उससे सप्तम राशि से सप्तमांश की गणना होती है ॥ ४३ ॥

नवमांश—

मेषादिषु क्रमान्मेषनक्रतौलिकुलीरतः ।

नवमांशा बुधैर्ज्ञेया होराशास्त्रविशारदैः ॥ ४४ ॥

मेषादि राशियों में क्रमसे मेष, मकर, तुला और कर्क इन राशियों से (३ अंश २० कला का) एक एक नवमांश होता है ऐसा होराशास्त्र के जानकारों ने कहा है । मेरा दूसरा पद्य—

चरे स्वस्मात्स्थिरेस्वाङ्गाद् द्वन्द्वे तत्पञ्चमादितः ।

नवमांशाधिपतयो ज्ञेया जातकविद्वरैः ॥ इति ॥ ४४ ॥

दशमांश—द्वादशांश—

लग्नादिदशमांशेशास्त्वोजे युग्मे शुभादिकाः ।

द्वादशांशाधिपतयस्तत्तद्राशिवशानुगाः ॥ ४५ ॥

विषमराशियों में उसी राशि से और समराशियों में उसके नवमराशि

से दशमांश की गणना होती है । प्रत्येक राशि में उसी राशि से द्वादशांश की गणना होती है ॥ ४५ ॥

राशिस्वामी-होरा-द्रेक्काण-सप्तमांश-नवमांश बोधक चक्र—

०	मे. वृ. मि. क. मि. क. तु. वृ. घ. म. कुं. मी.	राशि
स्वामी	शु. बु. वं. म. बु. शु. मं. वृ. श. श. वृ.	राशिस्वामी
होरा	सू. वं. सू. वं. म. वं. म. वं. म. वं. सू. वं. सू. वं.	१५ अंश
	वं. सू. वं. म. वं. म. वं. म. वं. सू. वं. सू. वं. म.	१५ अंश
द्रेक्काण	मे. वृ. मि. क. मि. क. तु. वृ. घ. म. कुं. मी.	१० अंश
	ति. क. तु. वृ. घ. म. कुं. मी. मे. वृ. मे. क.	२० अंश
	घ. म. कुं. मी. मे. वृ. मि. क. सि. क. तु. वृ.	३० अंश
सप्तमांश	मे. वृ. मि. म. सि. मी. तु. वृ. घ. क. कुं. क.	४।१७।८
	वृ. व. क. कुं. क. मे. वृ. मि. म. सि. मी. तु.	९।३४।१७
	मि. म. सि. मी. तु. वृ. घ. क. कुं. क. मे. वृ.	१२।५१।२५
	क. कुं. क. मे. वृ. मि. म. सि. मी. तु. वृ. घ.	१७।८।३४
	सि. मी. तु. वृ. घ. क. कुं. क. मे. वृ. मि. म.	२१।२५।४२
	क. मे. वृ. मि. म. सि. मी. तु. वृ. घ. क. कुं.	२५।४२।५१
	तु. वृ. घ. क. कुं. क. मे. वृ. मि. म. सि. मी.	३०।०।०
	मे. म. तु. क. मे. म. तु. क. मे. म. तु. क.	३।२०
नवमांश	वृ. कु. वृ. सि. वृ. कुं. वृ. सि. वृ. कुं. वृ. सि.	६।४०
	मि. मी. घ. क. मि. मी. घ. क. मि. मी. घ. क.	१०।०
	क. मे. म. तु. क. मे. म. तु. क. मे. म. तु.	१३।२०
	सि. वृ. कुं. वृ. सि. वृ. कुं. वृ. सि. वृ. कुं. वृ.	१६।४०
	क. मि. मी. घ. क. मि. मी. घ. क. मि. मी. घ.	२०।०
	तु. क. मे. म. तु. क. मे. म. तु. क. मे. म.	२३।२०
	वृ. सि. वृ. कुं. वृ. सि. वृ. कुं. वृ. सि. वृ. कुं.	२६।४०
	घ. क. मि. मी. घ. क. मि. मी. घ. क. मि. मी.	३०।०

दशमांश-द्वादशांश चक्र—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लंश । कला	
दशमांश	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	रु.	कुं.	वृ.	३।०	
	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	६।०	
	मि.	मी.	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	९।०	
	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	१२।०	
	सि.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	१५।०	
	क.	मि.	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	१८।०	
	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	वृ.	२१।०	
	वृ.	सि.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	२४।०	
	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	सि.	वृ.	तु.	क.	२७।०	
	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सि.	३०।०	
	द्वादशांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	२।३०
		वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	५।०
मि.		क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	७।३०	
क.		सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	१०।०	
सि.		क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	१२।३०	
क.		तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	१५।०	
तु.		वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	१७।३०	
वृ.		ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	२०।०	
ध.		म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	२२।३०	
म.		कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	२५।०	
कुं.		मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	२७।३०	
मी.		मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	३०।०	

षोडशांश—

मेषादिषु मेषसिंहचापेभ्यो गणयेद्बुधः ।

काम्बेशार्काः नृपाशेशाः ओजे युग्मे क्रमोत्क्रमात् ॥ ४६ ॥

मेषादि राशि यों में मेषसे आरम्भ करके नवभांश की नाँई (अर्थात् मेष में मेष से, वृष में सिंह से, मिथुन में धनु से फिर कर्क में मेषसे, सिंह में सिंहासे, कन्या में धनु से एवं आगे भी) षोडशांश की गणना होती है । (और विषमसंख्यक राशियों में क्रम से ब्रह्मा, गौरी, महादेव और सूर्य तथा सम राशियों में उत्क्रम से उक्त देवता षोडशांश के स्वामी होते हैं) ॥४६॥

षोडशांशचक्र—

विषमरा शावीशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	व.	म.	कुं.	मी.	अंशा	समराशा वीशाः
ब्रह्मा	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	१५२।३०	सूर्य
गौरी	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	३।४५।०	महादेव
महादेव	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	५।३७।३०	गौरी
सूर्य	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	७।३०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	९।२२।३०	सूर्य
गौरी	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	११।१५।०	महादेव
महादेव	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	१३।७।३०	गौरी
सूर्य	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	१५।०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	१६।५२।३०	सूर्य
गौरी	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	१६।४५।०	महादेव
महादेव	कुं.	सि.	तु.	कुं.	सि.	तु.	कुं.	सि.	तु.	कुं.	सि.	तु.	२०।३७।३०	गौरी
सूर्य	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	२२।३०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	मे.	सि.	घ.	२४।२२।३०	सूर्य
गौरी	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	२६।१५।०	महादेव
महादेव	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	२७।७।३०	गौरी
सूर्य	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	३०।०।०	ब्रह्मा

त्रिंशत्—

कुजयमजीवज्ञसिताः पञ्चेन्द्रियत्रसुप्तुनीन्द्रियांशानाम् ।

विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिंशत्शवाः कल्प्याः ॥ ४५ ॥

विषम राशियों (१।३।५।७।९।११) में क्रमसे ५।५।५।५।५ अंशों के भौम, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र ये पाँच ग्रह स्वामी होते हैं । एवं विषम राशियों (२।४।६।८।१०।१२) में विपरीत अर्थात् ५।७।९।११ अंशों के शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनैश्वर आर मङ्गल ये त्रिंशत्श स्वामी होते हैं ॥ ४७ ॥

त्रिंशत्शबोधकचक्र—

मे० मि० सि० तु० ध० कुं०	वृष० कर्क० कन्या० वृ० मक० मी०
५ मङ्गल	५ शुक्र
५ शनैश्वर	७ बुध
८ बृहस्पति	८ बृहस्पति
७ बुध	५ शनैश्वर
५ शुक्र	५ मङ्गल

षष्ट्यंश—

षष्ट्यंशकानामधिपास्त्वयुग्मे घोरंशकाद्याः सुरदेवभागाः ।

यदीन्दुरेखादिद्युभाशुभांशाःक्रमेण युग्मे तु यथा विलोमात् ॥४८॥

३०।३० कलाका एक एक षष्ट्यंश होता है । प्रत्येक राशि में उसी राशि से प्रारम्भ होता है । और उनके घोरंशक इत्यादि क्रमसे विषम राशियों तथा इन्दु रेखादि उत्क्रम से सम राशियों में स्वामी होते हैं । जो चक्र से स्पष्ट है ॥ ४८ ॥

पारिजातादिसंज्ञा—

ऐक्यं द्वित्रयादिवर्गाणां क्रमाब्देयं विचक्षणैः ।

पारिजातमुत्तमं गोपुरं सिंहासनं तथा ॥ ४९ ॥

पारावतांशकं देवलोकं च ब्रह्मलोककम् ।

ऐरावतं तु नवकं वैशेषिकमतः परम् ॥ ५० ॥

जो ग्रह अपने द्वां वर्गमें स्थित होतो पारिजातम्भ, ३ वर्ग में हो तो उन्न-
मम्भ, चार वर्ग में हो तो गोपुरम्भ, पाँच आत्मवर्ग में हो तो पिहासनम्भ,
छ वर्ग में होतो पाराधतांशकम्भ, सात वर्ग में हो तो देवलोकम्भ, आठ वर्ग
में होतो प्रहलोकम्भ, नववर्ग में बड़ा वर्ग पेशवतांशकम्भ तथा दश वर्ग में
व्यवर्धयत होतो वैशालकांशकम्भ कहा जाता है ॥ ५९-६० ॥

विशोत्तरीया पञ्चमा दशा—

दशा चान्तदशा चैव विदशोपदशा तथा ।

प्राणारुष्या च फलं तासां वदेच्छास्त्रानुसारम् ॥ ५१ ॥

१ महादशा, २ अन्तर दशा, ३ विदशा (प्रत्यन्तर दशा), ४ उपदशा,
(सूक्ष्मदशा) और ५ प्राणदशा ये ५ प्रकार की दशायें होती हैं । इनके
फलों का शास्त्र के अनुसार आदेश करे ॥ ५१ ॥

महादशाजन—

स्युः कृत्तिकादिनवकत्रिकभे रविन्दु-

भौमाऽगुजीवशनिविच्छिखिभार्गवाणाम् ।

षट्दिङ्मगेभविधु-भूप-नवेन्दु शैल-

भू-भूधरा नखपिताः क्रमतो दशाब्दाः ॥ ५२ ॥

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ करके नव नव नक्षत्र ३ आवृत्ति में गिनने
पर क्रमसे सूर्य, चन्द्रमा, सङ्गल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र
इनकी दशा के ३।१०।७।१८।१६।१९।१७।१२० वर्ष होते हैं ॥ ५२ ॥

विशोत्तरीया दशा—

नक्षत्र	कृत्ति० उ.फ उ.षा	रोहि० हस्त श्रवण	मृग० चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा० स्वाती शत०	पुन० विशा. पू.भा०	पुष्य अनु० उ.भा	आश्ले. ज्येष्ठा रेवती	मघा मूल अश्वि	पू.फ पू.षा भरणी
दशेश	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२०

(क) दशाभुक्तभोग्यान्वयः—

भयात्मानेन हता दशाब्दा

भभोगमानेन हताः फलं स्यात् ।

समादिकं भुक्तमानेन हीना

दशामितिर्भोग्यमितिः स्फुटा स्यात् ॥

ततः प्रभृत्येव दशाफलानि

प्रकल्पनीयानि बुधैर्ग्रहाणाम् ॥ ५३ ॥

दशा वर्ष को पलात्मक भयात् से गुणा करके पलात्मकभभोग से भाग देने पर लब्धि वर्ष होता है । फिर वर्ष शेष को १२ से गुणा करके उसी भभोग से भाग देने पर लब्धि मास आता है । पुनः मास शेष को ३० से गुण के उसी हर से भाग देने पर भागफल गतदिन आता है । एवं दिन शेष को ६० से गुणा करके उसी भाजक से भजन करने पर लब्धि गतघटी होती है और घटी शेष को ६० से गुण के उसी भाजक से भाग देने पर लब्धि पला होती है । एवं ५ स्थानों तक लब्धि लेकर आगे प्रयोजनाभाव से शेष को परित्याग कर देना चाहिये । अत एव किसी ने लिखा भी है—

शेषादकगुणा मासाः शेषात्त्रिंशद्गुणा दिवा ।

शेषात्षष्टिगुणा नाड्यः शेषात्षष्टिगुणाः पलाः ॥ इति ।

इस भांति जन्मकालीन दशा का सौरात्मक भुक्त वर्ष, मास, दिन, घटी, पल होता है । इस को दशा वर्ष में घटा देने से शेष दशा का भोग्य वर्षादि हो जाता है । यही से दशा की प्रवृत्ति होती है ॥ ५३ ॥

(ख) दशा का भोग्यानयन—

भयात्घटयूनभभोगमानं स्वैः

स्वैर्दशाब्दैर्गुणितं विभक्तम् ।

भभोगमानेन फलं भवेद्य-

त्तदेव भोग्याः शरदो दशायाः ॥ ५४ ॥

भयात् को भभोग में घटा कर जो शेष बचे उसको पलात्मक बना के दशा वर्ष से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि दशा का भोग्य वर्षादिक हो जाता है ॥ ५४ ॥

दशा का भुक्तवर्षानयन-

पलात्मक भयात् २७६६

शनिदशावर्ष = १९

२४७९६

२७६६

३४३४) ६२३४६ (१६।२।२७।३२।११

३४३४ वर्षादि दशा भुक्त हुआ

१८००९

१७१७०

८३६

१२

३४३४) १००२०

६८६८

३१५२

३०

३४३४) ९४६६०

६८६८

२६८८०

२४०३८

१८४२

६०

३४३४) ११०६२०

१०३०२

७६००

६८६८

६३२

६०

३४३४) ३७९२०

३४३४

३६८०

३४३४

१४६ = शेष

'अर्धाल्पे त्याजं' इस नियम के अनुसार शेष १४६ को छोड़ दिया तो लब्धि १६।२।२७।३२।११ दशा का भुक्तवर्षादि हुआ ।

दशा का भोग्यवर्षानयन-

पलात्मक भोग्य ६७१

शनिदशावर्ष = १९

६१११

६७१

३४३४) १२९०१ (३।९।२।२७।४१

१०३०२ वर्षादि दशाभोग्य-

२६९९ काल हो गया

१२

३४३४) ३११८८

३०९०६

२८२

३०

३४३४) ८४६०

६८६८

१६९२

६०

३४३४) ९६६२०

६८६८

२६८४०

२४०३८

२८०२

६०

३४३४) १६८१२०

१३७३६

३०७६०

२७४७२

३२८८ = शेष

अर्धाधिक होने के कारण ८ की जगह शेष ९ कल्पना कर लिया तो वर्षादिक दशा का ३।९।२।२७।४१ भोग्य काल हुआ ।

इस प्रकार दशाके भुक्त और भोग्य दोनों का साथ साथ गणित करने से कमी अशुद्धि नहीं हो सकती ।

महादशा लिखने का क्रम —

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चन्द्र	दशेश
३	१७	७	२०	६	१०	वर्ष
६	०	०	०	०	०	मास
२	०	०	०	०	०	दिन
२७	०	०	०	०	०	घटी
४९	०	०	०	०	०	पल
१६६०	१६६४	२०११	२०१८	२०३८	२०४४	संवत्
११	८	८	८	८	८	राशि
२०	२३	२३	२३	२३	२३	अंश
५८	२५	२५	२५	२५	२५	कला
०	४६	४६	४६	४६	४६	विकला

(ग) स्पष्टचन्द्रमा ही पर से दशाका भुक्त भोग्यानयन—
स्फुटेन्दोः कलाद्यं विभक्तं स्वखेभैः ८००

फलं भानि दास्रादिकानि स्युरेवम् ।

दशाब्दैर्हतं शेषकं खाभ्रनागौ ८००

हृतं स्यात्समाद्यं दशाभुक्तमानम् ॥ ५५ ॥

ततस्तद्विशोध्यं दशावर्षमध्ये-

वशिष्टं भवेद्भोग्यमानं दशायाः ।

फलं पूर्ववत्तस्य कल्प्यं सुसद्भि-

र्महद्भिस्तथा काशिकायां वसद्भिः ॥ ५६ ॥

राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा की कला बना के ८०० का भाग देने पर लब्धि गत नक्षत्रकी संख्या होता है । अब वर्तमान नक्षत्रके अनुसार जो दशावर्ष आवे उससे शेष कला को गुणा करके ८०० का भाग देने पर लब्ध वर्षादि दशा का भुक्तमान होता है । उसको दशा वर्ष में घटा देने से शेष दशाका भोग्यवर्षादि होता है ॥ ५५-५६ ॥

(घ) प्रकारान्तर से—

भागपूर्वः शशी न्याहतः खाब्धि ४० हत्तफलं यातनक्षत्रसंख्या भवेत् ।
शेषकं स्वैर्दशाब्दैर्गुणं भाजितं शून्यवेदैः ४० दशाभुक्तमानं भवेत् ॥
तत्परं पूर्ववद्भोग्यमानं तथा कल्पनीयं फलं जातकज्ञैः सदा ॥५७॥

अंशादिक स्पष्ट चन्द्रमा को ३ से गुणा करके ४० का भाग देने पर लब्धि नक्षत्र की संख्या होती है । शेष अंशादि को दशवर्ष से गुणा करके ४० का भाग देनेसे लब्धि दशा का भुक्तवर्षादि होता है । उसके बाद नृवृत्तिविधि से भोग्य को कल्पना करे ॥ ५५ ॥

(क) अंशादि नक्षत्र शेष पर से दशा का भोग्यान्वयन—

भागादिकं वा किल यद्भूशेषं

त्रिघैर्दशाब्दैर्गुणितं विभक्तम् ।

शून्याब्धि ४० भिस्तत्फलं भोग्यमानं

विना प्रयासेन भवेद्दशायाः ॥ ५६ ॥

अंशादि नक्षत्र शेष(१) (भोग्य) को त्रिगुणित दशावर्ष से गुणा करके ४० का भाग देने से लब्धि दशा का भोग्यवर्षादि होता है ॥ ५६ ॥

(२) अन्तरदशासाधन का सुलभप्रकार -

दशादशाघातभवस्य योद्ध

आद्यः स धीरैस्त्रिगुणो विधेयः ।

तावन्मिताः स्युर्दिवसाश्च मासाः

शेषाद्भुक्तुल्याः सुधियाऽवगम्याः ॥ ५७ ॥

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर दशा निकालनी हो उन दोनों ग्रहों के महादशा वर्षों का परस्पर गुणा करने से जो अङ्क (संख्या) हो उसके आद्यङ्क को ३ से गुणा कर देने पर दिन हो जाता है । और शेषाङ्क के समान मास होता है (मास संख्या १२ से अधिक होतो १२ का भाग देकर वर्ष बना लेना चाहिये) ॥ ५७ ॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि का अन्तर लाना है तो बुधके दशावर्ष १७ से शनि के दशावर्ष १९ को गुणा किया तो $१७ \times १९ = ३२३$ हुए इन में आद्यङ्क ३ को ३ से गुणा किया तो ९ दिन हुए । और शेष ३२ मास बचे । अर्थात् बुध की महादशा में शनि का अन्तर २ वर्ष ८ मास ९ दिन का हुआ । एवं सर्वत्र अन्तरदशा का साधन बड़ी सुगमता से हो जाता है ।

१. स्पष्ट चन्द्रकला में ८०० से भाग देने पर जो लब्धि आवे वह गत नक्षत्र की संख्या होती है और शेष वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कला होती है । भुक्तकला को ८०० में घटा के ६० का भाग देने से नक्षत्र का भोग्यांश (अंश शेष) होता है ।

बुध की महादशा में सर्वा की अन्तर्दशा ।

वृ.	मं.	शु.	बु.	शु.	मं.	शु.	वृ.	मं.	दशक
२	०	२	०	२	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	०	११	३	३	८	मास
२७	२७	०	३	०	२७	१८	३	१	दिन
१९९४	१९९७	१९९८	२०००	२००१	२००३	२००४	२००६	२००९	२०११
८	१	६	६	९	२	२	६	८	८
२३	२०	१७	१७	२३	२३	२०	८	१४	२३

अन्तरादिसाधन का दूसरा प्रकार—

श्वैः स्वैर्दशाब्दैर्गुणितं दशादिवर्षादिकं विंशतियुक्शतेन १२० ।

यजेच्च लब्धं हि निजान्तरान्तर्दशादिमानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ६० ॥

जिस ग्रह की दशा, अन्तरःशा, प्रत्यन्तरदशा आदि में अन्तरदशा प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा आदि का नाशन करना हो, उस ग्रह के दशावर्ष से अन्य ग्रह के दशावर्ष, अन्तरदशा मास, प्रत्यन्तरदशा दिन इत्यादि को गुणा करके १२० का भाग देने से अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा, इत्यादि का वर्ष मास, दिनादिक होता है ॥ ६० ॥

अवरोहक्रम से ध्रुवकवश अन्तरादि का साधन (ग्रन्थान्तर से) —

रामैर्हताश्चार्कमुखग्रहाणां दशाब्दकास्ते दिवसा भवन्ति ।

दशासमानां खलु षष्ठभागः शुक्रस्य भुक्तिः सकलग्रहेषु ॥६१॥

देशेश्वरदिनैर्हीना शुक्रभुक्तिर्भवेच्छनेः ।

सैव हीना दशानाथदिनैश्चागोः स्मृता हि सा ॥ ६२ ॥

रहिता चैव सा ज्ञेया चन्द्रजस्य तु तैर्दिनैः ।

एवं हीना च सा ज्ञेया दशानाथदिनैर्गुरोः ॥ ६३ ॥

अगोस्त्रिभागं रविभुक्तिमाहुः शुक्रस्य चार्धं हिमगोर्भवेत्सा ।

युता दशानाथदिनैः रवेस्तु भुक्तिर्भवेच्चैव कुजस्य केतोः ॥

एवं समस्तग्रहभुक्तयस्तु कार्या दिनैशादिखगेश्वराणाम् ॥ ६४ ॥

सूर्यादिक ग्रहों के दशावर्ष को ३से गुणाकर देने से ध्रुवक हो जाता है। प्रत्येक ग्रह के दशावर्ष के छठे भाग के बराबर शुक्र की अन्तरदशा होती है। शुक्र की अन्तरदशामें ध्रुवक घटाने से शनि का अन्तर, शनि के अन्तर

में ध्रुवक घटाने से राहुका अन्तर, राहु के अन्तर में ध्रुवक घटाने से बुध का अन्तर, बुध के अन्तर में ध्रुवक घटाने से बृहस्पति का अन्तर होता है । राहु की अन्तरदशा की तिहाई के तुल्य सूर्यका अन्तर, शुक्रान्तर के आधे के बराबर चन्द्रमा का अन्तर और सूर्य के अन्तर में ध्रुवक जोड़ देने से मङ्गल और केतु का अन्तर होता है ॥६१-६४॥

आरोहक्रमसे अन्तरादिका साधन—

निघ्नं त्रिभिः खलु खगस्य दशाप्रमाणं स्पष्टं भवेद्ध्रुवकसंज्ञकमन्तरार्थम् ।
दिग्भी रसैश्च गुणितं क्रमशो भवेतां स्पष्टेऽन्तरे हिमरुचो दिवसेश्वरस्य ६५
द्वयोर्युताविन्द्रगुरोः प्रमाणं ततो भवेयुर्ध्रुवकस्य योगात् ।

बुधाऽगुसौर्याऽऽस्फुजितां क्रमेणान्तराब्दमानानि परिस्फुटानि ॥६६॥

सूर्यान्तरे तद्ध्रुवकस्य योगाद्भौमस्य केतोश्च परिस्फुटत्वम् ।

ज्ञेयं बुधैः सद्दिषणाधनादयैः सज्ज्यौतिषाळोडनसुप्रवीणैः ॥ ६७ ॥

जिसकी महादशा में ग्रहोंका अन्तर साधन करना हो उसके दशावर्ष का ३ से गुणा करनेसे उसका ध्रुवक हो जाता है । उक्त ध्रुवक को क्रमसे १० और ६ से गुणन करने से चन्द्रमा और सूर्यका अन्तर हाता है । इन दोनों (सूर्य और चन्द्रमा) के अन्तरदशाओंके योगके बराबर बृहस्पति का अन्तर होता है । बृहस्पति के अन्तर में बार२ ध्रुवक जोड़ने से क्रमसे बुध, राहु, शनि और शुक्र का अन्तर हा जाता है । सूर्य के अन्तर में ध्रुवांक जोड़ देने से मङ्गल और केतु का अन्तर होता है ॥ ६५-६७ ॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में ९ ग्रहों का अन्तर लाना है तो बुध के दशावर्ष को ३ से गुणा कर दिया तो $१७ \times ३ = ५१$ दिन अर्थात् १ महीना २१ दिन बुधका ध्रुवक हुआ । इस (१।२१) को क्रमसे १० और ६से गुण दिया जाय तो १७ महीना (१वर्ष ५ मास) चन्द्रमाका और १० महीना ६ दिन सूर्यका अन्तर हुआ । दोनों को जोड़ दिया तो २ वर्ष ३ महीना ६ दिन बृहस्पति का अन्तर हुआ । इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ४ महीना २७ दिन बुधका अन्तर हुआ । इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ६ महीना १८ दिन राहुका अन्तर हुआ । फिर इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ८ मास ९दिन शनिका अन्तर हुआ । फिर इसमें १।२१ ध्रुवक जोड़ दिया तो २ वर्ष १० महीना शुक्र का अन्तर हुआ । पुनः सूर्य के अन्तर (१० म० ६ दि०) में ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो ११ महीना २७ दिन केतु और मङ्गल का अन्तर हुआ । इन अन्तरों को यथास्थान रख दिया तो पूर्व लिखे चक्र के तुल्य बुधमें ९ ग्रहों के अन्तर हो गये । (४९ पृष्ठ देखिये)

प्रत्यन्तर का ध्रुवकज्ञान—

महादशाधीश्वरवर्षघातःखवेद४०भक्तो दिवसादिकः स्यात् ।

ध्रुवोनु प्रत्यन्तरके प्रसाध्यं पूर्वप्रकारेण दशाप्रमाणम् ॥ ६८ ॥

ग्रहों में प्रहों के महादशा वर्षों को आपस में गुणन करके ४० का भाग देनेसे लब्धि दिनादि प्रत्यन्तर साधन करने के लिये ध्रुवक होता है । इस ध्रुवक परसे पूर्व विधिके अनुसार प्रत्यन्तरदशा का साधन करना चाहिये ॥६८॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि की अन्तर दशा में सब ग्रहों का प्रत्यन्तर साधन करना है तो बुध और शनि के दशावर्षों का गुणा करके ४० का भाग दिया तो

$$\frac{१७ \times १९}{४०} = ८ \text{ दिन } ४ \text{ घंटे } ३० \text{ पल ध्रुवक हुआ । इस पर से पूर्ववत् प्रत्यन्तर दशा बन जायगी ।}$$

सूक्ष्मादि का ध्रुवनयन—

महादशादेर्नाथानां दशाब्दा गुणिता मिथः ।

खनागैः खनृपैर्भक्ता सूक्ष्मे प्राणे परिस्फुटौ ॥ ६९ ॥

ध्रुवौ भवेतां घट्यादि-पलाद्यौ सुधिया ततः ।

प्रसाध्यं पूर्ववत्सर्वं प्रत्यन्तरदशादिकम् ॥ ७० ॥

दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके स्वामियों के महादशावर्षों का आपस में गुणा करके ८० का भाग देने से उपदशा (सूक्ष्मदशा) आनयन के लिये घट्यादिक ध्रुवक होता है । और दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशा के स्वामियों के दशावर्षों का परस्पर गुणन करके १६० का भाग देने से प्राणदशा का ध्रुवक होता है । उसके बाद पूर्वरीति (६५-६७ श्लोकों) के अनुसार सूक्ष्मदशा और प्राणदशा का साधन करना चाहिये ॥६९-७०॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि की अन्तरदशा में गुरु की प्रत्यन्तर दशा में सब ग्रहों की सूक्ष्मदशा का ज्ञान करना है तो बुध की महादशा का वर्ष १७, शनि की महादशा का वर्ष १९ और गुरु की महादशा का वर्ष १६ है । इनका आपस में गुणन फल निकाल के ८० का भाग दिया तो गुरु की प्रत्यन्तर दशा में सब ग्रहों की

सूक्ष्मदशा साधन के लिये घट्यादि ध्रुवक = $\frac{१७ \times १९ \times १६}{८०}$

= ६४ घ० ३६ पल

= १ दि० ४ घ० ३६ प० हुआ

इस पर से पूर्व विधि के अनुसार प्रत्येक ग्रहों की सूक्ष्म दशा का ज्ञान करना चाहिये ।

एवं प्राणदशानयनार्थं ध्रुवक का भी ज्ञान होता है ।

चन्द्रमा

चन्द्र की महादशमें चन्द्रमा
के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चन्द्र की महादशा में शनि के अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

व.	मं.	रा.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	व.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
०	०	१	२	३	४	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	१	०	०	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	२१	१७	२०	१५	२	१	२०	३	१	१०	०	२०	१७	३		दिन
०	३०	०	०	३०	३०	०	०	३०			३५	३०	१	१५	१०	०	३०	३०	४६	घटी

चन्द्रकी महादशमें राहुके अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चन्द्र की महादशा में गुरु के अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	व.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०	२	२	२	०	२	०	१	०	२	०	मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	७	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	४	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्रकी महादशमें शनिके अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चन्द्र की महादशा में बुध के अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	धु.	वु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	नु.	श.	धु.	दशेश
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०	२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	४	१२	२९	२५	२५	५	०	१६	८	२०	४	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	४५	१०	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	घटी

चन्द्र की महादशमें केतु के अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चन्द्र की महादशा में शुक्र के अन्तर
में ग्रहों का प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	धु.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	नु.	के.	धु.	दशेश
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	३	१	१	१	३	३	३	३	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	१	१०	०	२०	५	०	२०	५	२६	५	५	दिन
१५	०	३०	३	१५	३०	०	१५	४५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्रमा की महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	१	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	३०	घटी

मङ्गल

<p>भौम महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										<p>भौम महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										
म.	रा.	बु.	शु.	क.	सू.	चं.	मं.	शु.	धु.	रा.	बु.	शु.	क.	सू.	चं.	मं.	शु.	धु.	दशेश	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	०	मास
८	२२	१५	२३	२०	८	२४	७	१२	९	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३	दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	१३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	९	घटी
३०	०	०	३८	३०	३०	०	०	०	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
<p>भौम महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										<p>भौम महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										
बु.	शु.	क.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	धु.	ग.	बु.	क.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	दशेश	
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	२	१	०	२	०	१	०	१	१	०	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२	३	२६	२३	७	१९	३	२३	२९	२३	३	दिन
४८	१२	३६	३३	०	४८	०	३६	२४	४८	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१९	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल
<p>भौम महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										<p>भौम महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										
बु.	क.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	धु.	धु.	क.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	बु.	धु.	दशेश	
१	०	१	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास	
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	१	दिन
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	५८	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	१३	घटी
३०	३०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	पल		
<p>भौम महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										<p>भौम महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर</p>										
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	बु.	क.	धु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	बु.	क.	शु.	धु.	दशेश
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
१०	२९	५	२४	२३	२६	६	२९	२४	३	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	१	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३	घटी

भौम महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	क.	सू.	धु.	दशेश		
०	०	१	०	१	०	१	०	मास		
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१	दिन
३०	१५	३०	०	१७	४५	१६	०	३०	४५	घटी

राहु

राहु महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										राहुमहादशामें गुरुके अन्तरमें ग्रहों का प्रत्यन्तर										
रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	शु.	दशेश
४	४	५	४	१	५	१	२	१	०	३	४	४	१	४	१	२	१	४	०	मास
२६	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	८	२७	१६	३	२०	२४	१३	१०	१	७	७	दिन
४८	३६	५४	४०	४२	०	३६	०	४२	६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३३	१२	घटी
राहु महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										राहुमहादशा में बुधके अन्तरमें ग्रहों का प्रत्यन्तर										
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	शु.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	शु.	दशेश
५	४	१	५	१	२	१	५	४	०	४	१	५	१	२	१	४	४	४	०	मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	८	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२७	७	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	३३	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	०४	२१	३२	घटी
राहु महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										राहुमहादशामें शुक्रके अन्तरमें ग्रहों का प्रत्यन्तर										
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	शु.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	दशेश
०	२	०	१	०	१	१	१	१	०	६	१	३	२	५	४	५	५	२	०	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	३	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	९	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५९	३३	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी
राहु महादशा में से सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										राहुमहादशा में चन्द्रके अन्तरमें ग्रहों का प्रत्यन्तर										
सू.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	शु.	चं.	मं.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	शु.	दशेश
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	१	१	२	२	२	२	१	३	०	०	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१६	१८	२४	२	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	४८	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	घटी

राहु की महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	शु.	दशेश
०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	३	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	९	घटी

गुरु

गुरुमहादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु. श.	बु. के.	शु. सू.	च. म.	रा. धु.
३ ४	३ १ ४	१ २ १ ३ ०		
१२ १	१० १४ ८ ८	४ १४ २६ ६		
२४ ३६	४८ ४८ ० २४ ०	४८ २२ २४		

गुरुमहादशा में धनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

रा. बु. के. शु. सू. च. म. रा. बु. धु. दशेश
४ ४ १ ६ १ ० १ ४ ४ ०
२४ १ २३ २ १६ १६ २३ १६ १ ७
२४ १२ १२ ० ३६ ० १२ ४८ ३६ ३६

गुरुमहादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु. के. शु. सू. च. म. रा. बु. श. धु.
३ १ ४ १ २ १ ४ ३ ४ ०
२६ १७ १६ १० ८ १७ २ १८ ९ ६
३६ ३६ ० ४८ ० ३६ २४ ४८ १२ ४८

गुरुमहादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

क. शु. सू. च. म. रा. बु. श. बु. धु. दशेश
० १ ० ० ० १ १ १ १ ०
१९ २६ ३६ २८ १९ २० १४ २३ १७ २
३६ ० ४१ ० ३६ २४ ४८ १२ ३६ ४८

गुरुमहादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

शु. सू. च. म. रा. बु. श. बु. के. धु.
६ १ २ १ ४ ४ ६ ४ १ ०
१० १८ २० २६ २४ ८ २ १६ २६ ८
० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

गुरुमहादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

सू. च. म. रा. बु. श. बु. के. शु. धु. दशेश
० ० ० १ १ १ १ ० १ ०
१४ १४ १६ १३ ८ १६ १० १६ १८ २
२४ ० ४८ १२ २४ ३६ ४८ ४८ ० २४

गुरुमहादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

च. म. रा. बु. श. बु. के. शु. सू. धु.
१ ० २ २ २ २ ० २ ० ०
१० २८ १२ ४ १६ ८ २८ २० २४ ४
० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

गुरुमहादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

म. रा. बु. श. बु. के. शु. सू. च. धु. दशेश
० १ १ १ १ ० १ ० ० ०
१९ २० १४ २३ १७ १९ २६ १६ २८ २
३६ २४ ४८ १२ ३६ ३६ ० ४८ ० ४८

गुरुमहादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

रा. बु. श. बु. के. शु. सू. च. म. धु. दशेश
४ ३ ४ ४ १ ४ १ २ १ ०
१ २६ १६ २ २० २४ १३ १२ २० ७
३६ १२ ४८ २४ २४ ० १२ ० २४ १२

शनि

शनि महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शनि महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	शु.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	शु.	दशेश
५	५	२	६	१	३	३	५	४	०	४	१	५	१	२	१	४	४	५	०	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	९	१७	२६	११	१८	२०	२६	२६	९	३	८	दिन
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	१	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	४	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल
शनि महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शनि महादशा में शुक के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	शु.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	दशेश
०	०	०	१	०	१	१	२	१	०	६	१	२	२	५	५	६	५	२	०	मास
२३	६	१८	३	२३	२९	२३	३	२६	३	१८	२७	५	६	२१	२	०	११	६	९	दिन
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	१९	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
शनि महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शनि महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	शु.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	शु.	दशेश
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	१	१	२	२	३	२	१	३	०	०	मास
१७	२८	११	२१	१५	२४	१८	१०	२७	२	१७	३	२७	१६	०	२०	३	५	२८	४	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	०७	२७	०	५१	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५	घटी
शनि महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शनि महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	शु.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	शु.	दशेश
०	१	१	२	१	०	२	०	१	०	५	४	५	४	१	५	१	२	१	०	मास
२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	८	८	दिन
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१९	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	३३	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

शनि महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	शु.	दशेश
४	४	४	१	५	१	२	१	४	०	मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	७	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घटी

बुध

बुधमहादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										बुधमहादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	ग.	धु.		के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
४	१	४	१	२	१	४	३	४	०	०	१	०	०	०	१	१	१	१	०	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	७	२०	२९	१७	१९	२०	२३	१७	२६	२०	२	दिन
३९	३४	३०	२१	१६	३४	३	३६	१६	१३	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	५८	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	पल
बुधमहादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										बुधमहादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
५	१	२	१	५	४	५	४	१	०	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२०	२१	२६	२९	३	१६	११	२४	२९	८	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	२	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	३३	घटी
बुधमहादशा में चन्द्रके अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										बुधमहादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.	म.	रा.	बृ.	रा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	४	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	२	दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	१५	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	५८	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	पल
बुधमहादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										बुधमहादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	धु.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
४	४	४	४	१	५	१	२	१	०	३	४	३	१	४	१	२	१	४	०	मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	७	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६	दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	३९	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	घटी

बुधमहादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.	दशेश
५	४	१	५	१	२	१	४	४	०	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	८	दिन
३९	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	४	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

केतु

केतु महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										केतु महादशा में शुक्र के अन्तर ग्रहों के प्रत्यन्तर										
क.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	धु.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२९	१९	२३	२०	१	१०	२१	६	२४	३	२६	६	२१	२४	३	दिन
३४	३०	२१	१६	३४	३	३६	१६	४९	१३	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	घटी
३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
केतु महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में चन्द्रके अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										
सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	शु.	धु.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१	१७	१२	१	२८	३	१९	१२	६	१०	१	दिन
१८	३०	२१	१४	४८	१६	१९	२१	०	३	३०	६	३०	०	१६	४३	१६	०	३०	१६	घटी
केतु महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	चं.	धु.	रा.	वृ.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२१	८	२४	७	१२	१	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३	दिन
३४	३	३६	१०	४९	३४	३०	२१	१६	१३	४२	२४	११	३३	३	०	१४	३०	३	९	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल
केतु महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
वृ.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	धु.	दशेश
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	२	१	०	२	१	१	०	१	१	०	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१०	३१	१३	३	१७	१६	१६	११	१२	१९	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

केतु महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	क.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	धु.	दशेश
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२	दिन
३४	४९	३०	११	४९	४९	३३	३६	३१	१८	घटी
३०	३	०	०	३०	३०	०	०	३०	३०	पल

शुक्र

शुक्र महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शुक्र महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
शु.	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	धु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
६	२	३	२	६	६	६	६	२	०	०	१	०	१	१	१	१	०	२	०	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	१०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी
शुक्र महादशामें चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शुक्र महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
१	१	३	२	३	२	१	३	१	०	०	३	१	२	१	०	२	०	१	०	मास
२०	६	०	२०	६	२६	५	१०	०	६	२४	३	३६	६	२९	२४	१०	२१	६	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घटी
शुक्र महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शुक्र महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
६	४	६	६	२	६	१	३	२	०	४	६	४	१	६	१	२	१	४	०	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	९	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	८	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी
शुक्र महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										शुक्र महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	धु.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	धु.	दशेश
६	६	२	६	१	३	२	६	६	०	४	१	६	१	२	१	६	४	६	०	मास
०	११	६	१०	२७	६	६	२१	२	९	२४	२९	२०	२१	२१	२९	३	१६	११	८	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घटी

शुक्र महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर ।

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
०	२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
२४	१०	२१	६	२४	३	२६	६	२९	३	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

योगिनी दशानवन—

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा ।

मङ्गलाद्या अन्दवृद्ध्या मङ्गलाष्टौ समा भता ॥ ७१ ॥

आसामीशाः क्रमाच्चन्द्रभान्वीज्यकुजचन्द्रजाः ।

मन्दाऽऽस्फुजित्सैदिकेया विज्ञेया हौरिकोत्तमैः ॥ ७२ ॥

जन्म नक्षत्र का संख्या में ३ जोड़ के ८ का भाग देने से शेष मङ्गला आदि ८ दशायें होती हैं । और उनके क्रम से चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति, मङ्गल, बुध, शनि, शुक्र और राहु-केतु भवानी होते हैं । स्फुटता लिये चक्र देखिये ॥ ७१-७२ ॥

योगिनीदशा ज्ञान—

	०	०	०	अश्वि	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृग
नक्षत्र	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आरद्रा	मघा	पूर्वाषाढा	उषा	हस्त
	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उषा
	श्रवण	वनिता	शतभिषा	पूर्वाषाढा	उषा	रेवती	०	०
दशा	मङ्गला	पिङ्गला	वाल्या	भ्रामरी	मद्रिका	उल्का	सिद्धा	मङ्गला
दशेश	चन्द्र	सूर्य	गुरु	शुक्र	बुध	शनि	शुक्र	रा, के
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८

योगिन्यन्तरदशा ज्ञान—

दशा दशाहता कार्या शिवनेत्रशिविभाजिता ।

लब्धं मासादिकं ज्ञेयं योगिन्यामन्तरं स्फुटम् ॥ ७३ ॥

सहादशा वर्ष को अन्तरदशेश के वर्ष से गुणाकरके ३ का भाग देने से लब्धि मासादिक अन्तरदशा(१) होती है ॥ ७३ ॥

सिद्धा महादशा में सङ्कटा की अन्तरदशा निकालनी है तो सिद्धा के वर्ष ७ को सङ्कटा के वर्ष ८ से गुणा करके ३ से भाग दिया तो $\frac{7 \times 8}{3} = 18$ मास २० दिन (अर्थात् १ वर्ष ६ महीना २०) सिद्धा में सङ्कटा का अन्तर (अथवा सङ्कटा में सिद्धा का अन्तर) हुवा ।

१ मङ्गला में अन्तर—

२ पिङ्गला में अन्तर—

मं.	पिं.	घा.	त्रा.	मं.	उ.	सिं.	सं.	पिं.	घा.	त्रा.	मं.	उ.	सिं.	सं.	मं.	दशा	
चं.	सू.	गु.	मौ.	बु.	श.	शु.	रा.	के.	सू.	बु.	मौ.	बु.	श.	शु.	रा.	के.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
०	०	१	१	१	२	२	२	१	२	२	३	४	४	५	०	०	मास
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	१०	दिन

१. योगिनी दशा के भुक्त और भोग्य वर्षादि को भी ५३-५४ श्लोको के अनुसार ही स्पष्ट कर लेना चाहिये ।

६ ज० दी०

३ धान्या में अन्तर—

४ आमरी में अन्तर

वा.	भ्रा.	म.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	भ्रा.	म.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	दशा
वृ.	भौ.	बु.	श.	शु.	रा.के.	चं.	सू.	मौ.	बु.	श.	शु.	रा.के.	चं.	सू.	वृ.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	मास
०	०	०	०	०	०	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिन

५ भद्रिका में अन्तर—

६ उल्का में अन्तर

म.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	भ्रा.	म.	दशा
बु.	श.	शु.	रा.के.	चं.	सू.	वृ.	भौ.	श.	शु.	रा.के.	चं.	सू.	वृ.	भौ.	बु.	दशेश
०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	वर्ष
८	११	०	१	१	३	५	६	०	२	४	२	४	६	८	१०	मास
१०	२०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०	०	०	०	०	१	०	०	दिन

७ सिद्धा में अन्तर—

८ सङ्कटा में अन्तर

सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	भ्रा.	म.	उ.	सं.	मं.	पि.	घा.	भ्रा.	म.	उ.	सि.	दशा
शु.	रा.के.	चं.	सू.	वृ.	भौ.	बु.	श.	रा.के.	चं.	सू.	वृ.	भौ.	बु.	श.	शु.	दशेश
१	१	०	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१	वर्ष
४	६	२	४	७	९	११	२	६	२	५	८	१०	१	४	६	मास
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	दिन

होरालग्नानयन—

द्विघ्नेष्टनाडयः पञ्चाप्तो मं शेषं च पलीकृतम् ।

दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयं भवेत् ॥

विषमेऽङ्के रवौ योज्यं समेऽङ्के लग्नभादिषु ॥ ७४ ॥

इष्ट घटी पल को २ से गुणा करके ५ का भाग देने से लब्धि राशि होती है । शेष का पल बना के १० से भाग देने पर लब्धि अंश होते हैं । यदि जन्मलग्न विषमसंख्यक हो तो राश्यादि सूर्य में एवं यदि जन्मलग्न सम संख्यक हो तो राश्यादि जन्मलग्न में पूर्व लब्धि को जोड़ने से स्पष्ट होरा लग्न होती है ॥ ७४ ॥

उदाहरण—

इष्टकाल १३।५५ को २ से गुणा किया तो (१३।५५) २ = २७।१० गुणन फल हुआ । इस २७।१० में ५ का भाग दिया तो लब्धि ५ राशि हुई । शेष २।५० का पल बना १७० के १० का भाग दिया तो लब्धि १७ अंश हुए । इस लब्धि राश्यादि ५।१७ को जन्म लग्न (मिथुन) विषम संख्यक होने के कारण स्पष्ट सूर्य ११।२०।५८।० में जोड़ दिया तो राश्यादि स्पष्ट होरा लग्न ५।७।५८।० हुई ॥

* किसी २ का मत है कि सर्वदा सूर्य ही में जोड़ना चाहिये परन्तु अनार्य होने के कारण यह मत हैय है ।

जैमिनि के अनुसार आयुर्दाय साधन—
लग्नेशरन्ध्रपत्योश्च लग्नेन्द्रोर्लग्नहोरयोः ।

सूत्राण्येवं प्रयुञ्जीयात्संवादादायुषां त्रये ॥ ७५ ॥

लग्ने वा मदने चन्द्रे चिन्तयेल्लग्नचन्द्रतः ।

अन्यथा शनिचन्द्राभ्यां चिन्तनीयं विचक्षणैः ॥ ७६ ॥

(१) लग्नेश और अष्टमेश से (२) लग्न और चन्द्रमा से और (३) लग्न तथा हारालग्न से वक्ष्यमाण प्रकार से आयु का साधन करना चाहिये । द्वितीय प्रकार में यदि चन्द्रमा या लग्न सप्तम में बैठा हो तो लग्न-चन्द्रमा पर से अन्यथा (लग्न या सप्तम में न पड़ा हो तो) शनि-चन्द्रमा पर से आयु साधन करना चाहिये ॥ ७५-७६ ॥

आयुर्दाय ज्ञान का प्रकार—

चरे चरस्थिरद्वन्द्वाः स्थिरे द्वन्द्वचरस्थिराः ।

द्वन्द्वे स्थिरो भयचरा दीर्घमध्याल्पकायुषः ॥ ७७ ॥

जिन दो ग्रहों के द्वारा आयु देखना है । उनमें यदि एक चरराशि में दूसरा चर, स्थिर या द्विस्वभाव में हो तो क्रम से दीर्घ, मध्य और अल्प आयु जानना । यदि एक स्थिर में दूसरा क्रम से द्विस्वभाव, चर और स्थिर में हो तो दीर्घ, मध्य और अल्प आयु समझना । एवं यदि एक द्वि-स्वभाव में दूसरा क्रम से स्थिर, द्विस्वभाव तथा चर में हो तो दीर्घ, मध्य और अल्प आयु का योग होता है । स्पष्टता के हेतु नीचे का चक्र देखिये ७७

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चरे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८	चरे लग्नेशः १ स्थिरेऽष्टमेशः ८	चरे लग्नेशः १ द्विस्वभावेऽष्टमेशः ८
स्थिरे लग्नेशः १ द्विस्वभावेऽष्टमेशः ८	स्थिरे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८	स्थिरे लग्नेशः १ स्थिरे अष्टमेशः ८
द्विस्वभावे लग्नेशः ० स्थिरे अष्टमेशः ८	द्विस्वभावे लग्नेशः १ द्विस्वभावे अष्टमेशः ८	द्विस्वभावे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८

आयु स्पष्ट करने का प्रकार—

रसाङ्कैर्दुर्गजाभ्रेन्दुभिः १०८शून्यमासै १२०

स्त्रिधा दीर्घमायुः कलौ सम्प्रदिष्टम् ।

चतुष्पष्टिष्वष्टबाह्वद्रघ्य७२शीति८०प्रमाणै-

र्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात् ॥ ७८ ॥

तथा द्वित्रिंशत्षड्वह्नि ३६शून्याब्धि ४०वर्षे—

भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते ॥ ७९ ॥

उपर्युक्त तीनों रीतियों में से तीनों प्रकारों से भिन्न २ आयु आवे तो लग्न होरालग्न पर से आई हुई आयु समझना । ९६, १०८, १२० वर्ष की दीर्घायु, ६४, ७२, ८० वर्ष तक मध्यायु एवं ३२, ३६, ४० वर्ष तक अल्पायु योग कहा जाता है । इन में ३२, ३६, ४० वर्ष के खण्ड होते हैं ।

यदि तीनों प्रकार से दीर्घायु हो तो १२० वर्ष, दो प्रकार से दीर्घायु हो तो १०८ वर्ष, एक प्रकार से दीर्घायु हा तो ९६ वर्ष आयु जानना । एवं तीनों प्रकारों से अल्पायु योग हो तो ३२ वर्ष दो प्रकार से अल्पायु हो तो ३६ वर्ष, एक ही प्रकार से अल्पायु योग आवे तो ४० वर्ष आयु खण्ड समझना । लग्नेश-अष्टमेश के सम्बन्ध से मध्यमायु हो तो ८० वर्ष, लग्न-चन्द्रमा या शनि-चन्द्रमा के सम्बन्ध से मध्यायुयोग आता हा तो ७२ वर्ष और लग्न होरालग्न द्वारा मध्यायुयोग निश्चित हुआ हो तो ६४ वर्ष आयु जानना (अर्थात् उक्त खण्डों का ग्रहण करके आयु स्पष्ट करना) चाहिये ।

उपर्युक्त विधि से आयुर्दाय विधायक ग्रहों का निश्चय हो जाने पर यदि एक ही प्रकार से साधन करना हो तो दोनों योग कारक ग्रहों के अंशादि का योग करके २ से भाग देने पर जो लब्ध हो, उसको अंशादि जानना । एवं यदि दो प्रकार से आयुर्दाय निश्चित हुआ हो तो चारो योग कर्ताओं के अंशादि का योग करके ४ का भाग देकर लब्धि अंशादि बना लेना । एवं यदि तीनों प्रकार से आयु का निश्चय किया गया हो तो छत्रो योगकर्ताओं के अंशादि का योग करके ६ का भाग देना जो लब्धि आवे उसको आयुर्दाय साधन के योग्य अंशादि जाने ।

उसके बाद इन लब्ध अंशादिकों को योगप्राप्त ३२, ३६ या ४० खण्डों से गुणा करके ३० का भाग देना तो लब्ध वर्षादि होगा इन लब्ध वर्षादिकों को अल्पायु हो तो अल्पायु के प्राप्तखण्ड में, मध्यायु साधन करना हो तो मध्यायु के प्राप्तखण्ड में और दीर्घायु लाना हो तो दीर्घायु के प्राप्तखण्ड में घटा देने से स्पष्ट आयुर्दाय का मान होता है ।

किसी २ आचार्य ने ३२, ६४ औ ९६ रूप अल्पायु मध्यायु और दीर्घायु का खण्ड कल्पना करके आयुर्दाय साधन करना लिखा है—

द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत् ।

चतुष्षष्ट्या पुरस्तात् ततो दीर्घमुदाहृतम् ॥

पूर्णमादौ हानिरन्तेऽनुपातो मध्यतो भवेत् ।

राशिद्वयस्य योगाद्धं वर्षाणां स्पष्टमुच्यते ॥

अत एव द्वात्रिंशद्रूप खण्डा पर से आयु साधन करने के लिये नीचे सारणी दी जाती है ॥ ७८-७९ ॥

श्रीशफलसारणी—

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०					
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०					
मास	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०				
दिन	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०	२४	१६	१२	६	०

कलाफलसारणी—

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०						
मास	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०				
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	३	९	१६	२३	२९	५	१२	१९	२६	३	९	१६	२३	२९	५	१२	१९	२६	३	९	१६	२३	२९	५	१२		
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
मास	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७		
दिन	१८	२४	१	७	१३	१९	२५	३	९	१५	२१	२७	३	९	१५	२१	२७	३	९	१५	२१	२७	३	९	१५	२१	२७	३	९	१५	२१	२७	३	९	१५	२१
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	

विकलाफलसारणी—

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०						
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५७	६४	७०	७६	८३	८९	९६	१०२	१०९	११६	१२२	१२९	१३६	१४३	१५०	१५७	१६४	१७१	१७८	१८५	१९२	१९९	२०६	२१३	२२०	२२७	२३४	२४१
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
दिन	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५१	५७	६४	७०	७६	८३	८९	९६	१०२	१०९	११६	१२२	१२९	१३६	१४३	१५०	१५७	१६४	१७१	१७८	१८५	१९२	१९९	२०६	२१३	२२०	२२७	२३४	२४१	२४८	२५५
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	

कक्ष्या हास-वृद्धि—

जैमिनि सूत्र के द्वितीयाध्याय प्रथमपाद के सूत्रों १०-१४ के अनुसार उपर्युक्त योगों में यदि शनि योगकर्ता हो तो कक्ष्या हास होता है । (अर्थात् दीर्घायु का मध्यायु, मध्यायु का अल्पायु, अल्पायु का आयुभाव हो जाता है) । किसीके मतमें कक्ष्याहास नहीं होता । किन्तु जैमिनि का मत है कि शनि अपने राशि वा अपने उच्चराशि में बैठा हो तो कक्ष्याहास नहीं होता

अन्यथा (न बैठा हो तो) कक्ष्याहास होता है ।

एवं योगकारक बृहस्पति लग्न वा सप्तम में पड़ा हो अथवा केवल शुभ-
ग्रहों से ही युक्त वा इष्ट हो तो कक्ष्यावृद्धि होती है ।

अन्य प्रकार से आयु विचार—

पितृलामरोगेशप्राणिनि कण्ठकादिस्थे स्वतश्चैवं त्रिधा ।

लग्न विषमसंख्यक हो तो क्रम से जो अष्टमेश और द्वितीयेश हों उनमें जो बलवान् हो वह ग्रह यदि लग्न से केन्द्र [१।४।७।१०] में हो तो दीर्घायु, पणफर [२।५।८।११] में हो तो मध्यायु और आपोक्लिम [३।६।९।१२] में हो तो अल्पायु जानना । यदि लग्न समसंख्यक हो तो उत्क्रम से जो अष्टमेश और द्वितीयेश [अर्थात् षष्ठेश और द्वादशेश] हों उन दोनों में जो ग्रह बली हो वह यदि केन्द्र में हो तो दीर्घायु पणफर में हो तो मध्यायु और अपोक्लिम में हो तो अल्पायु समझना ।

रठ्यादिक ग्रहों में जो सबसे अधिक अंशवाला हो उसको आत्मकारक कहते हैं । आत्मकारक से भी इसी प्रकार विचार करना चाहिये अर्थात् आत्मकारक ग्रह यदि विषम राशि में स्थित हो तो अष्टमेश और द्वितीयेश में, यदि समसंख्या की राशि में पड़ा हो तो षष्ठेश और द्वादशेश में जो ग्रह बली हो वह यदि कारक से केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यायु, आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है ।

परन्तु लग्न विषम संख्यक हो और कारक तृतीय में हो तो केन्द्र में रहने पर हीनायु, पणफर में मध्यायु और आपोक्लिम में दीर्घायु जानना तथा लग्न समसंख्याक और कारक एकादश में हो तो भा पूर्ववत् [केन्द्र में हीनायु, पणफर में मध्यायु और आपोक्लिम में दीर्घायु] जानना ।

इत दोनों योगों में अष्टमेश-द्वितीयेश अथवा षष्ठेश-द्वादशेश यदि कारक के साथ बैठा हो वा स्वयं कारक हो जाय तो मध्यमायु ही जानना ।

ग्रन्थसमाप्तिकाल—

हिमकरखगखेटेला १९९१ मिते विक्रमाब्दे

शिवतम इषमासे स्वच्छपक्षे वलक्षे ।

शशितनुजनुषो वारे तिथौ सूर्यसूनो-

रगमदपि सुपूर्ति जन्मपत्रदीपः ॥ ८० ॥

श्रीविक्रम सं० १९९१ आश्विनशुक्ल विंजया १० बुधवार को यह जन्म-
पत्रदीपक समाप्त हुआ ॥ ८० ॥

इत्याजमगढमण्डलान्तर्गतब्रह्मपुराभिजनसरयूपारीणपण्डित श्री-

धर्मदत्तद्विवेदितनुजन्मना ज्यौतिषाचार्यश्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद-

द्विवेदिना विरचितो जन्मपत्रदीपकः समाप्तः ।

यत्तत्सुदीपपरिदीपनतोऽपि नष्टोऽज्ञानान्धकारनिचयो बुबहृदतश्चेत् ।

न स्यात्तदेनकिरणोद्गमसुप्रकाशाद्घूकाक्षिदोष इव मे किल कोस्ति दोषः ॥

श्रीगुरुवः शरणम् ।

ताजिकनीलकण्ठी

जलदगर्जना-उदाहरणचन्द्रिका संस्कृतहिन्दीटीका,
गूढग्रन्थविमोचिनी-वासनया च सहिता ।

टीकाकारः—ज्यौ० आ० लो० व० काव्यतीर्थे पं० गङ्गाधरमिश्र जी

यह परीक्षार्थियों के लिये अत्यन्त उपयुक्त और आदरणीय व्याख्या है । देश भर में इसकी प्रशंसा हो रही है, क्योंकि हमारे योग्य संपादक ने उपर्युक्त सभी टीकाओं में अपने २ नाम के अनुकूल ग्रन्थ के परीक्षोपयोगी समस्त विषयों और कठिन स्थलों को इतनी सरलता से सिद्ध किया है कि प्रत्येक सुकोमलमति बालक भी थोड़ा सा अनुगम करके अपने आप भी उन विषयों का ज्ञान और अभ्यास कर सकता है । इसकी प्रशंसा स्वयं वया लिखी जावे जब ग्रन्थ आप के हाथों में आयगा आप भी प्रशंसा किये विना नहीं रहेंगे । ३॥)

वनमाला

सान्वय—‘अमृतधारा’ हिन्दी टीका सहित ।

पं० जीवनाथ झा विरचित फलित ग्रन्थों में यह सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में प्रश्न के आधार पर, प्रश्नों की स्थिति पर, वायुकी परिस्थिति पर तथा प्राकृतिक अनेक लक्षणों से वृष्टि का विचार एवं फसल का परिणाम तथा धान्य के व्यापार आदि विषयों का भी विचार सुचारु रूप से किया हुआ है । लघु होने पर भी सर्वोपयोगी होने से बड़े ही महत्व का यह ग्रन्थ है । १)

षट्पञ्चाशिका

भट्टोत्पलकृत संस्कृतटीका युक्त—‘विभा’ हिन्दीटीकासहित ।

आज तक इस ग्रन्थ की अन्य जितनी हिन्दी टीकायें प्रकाशित हुईं प्रायः वे सब मनमानी होने के कारण ही फलादेश में उपयुक्त नहीं होती थीं, अतः जनता के आप्रह से योग्य विद्वानों द्वारा भट्टोत्पल कृत संस्कृत टीका के साथ २ उसकी छायांसार ही सरल भाषा टीका सहित यह संस्करण प्रकाशित हुआ है । २=)

धराचक्रम्

‘सुबोधिनी’ भाषा टीका सहितम् ।

यदि आप रत्नगर्भा भगवती वसुन्धरा के अन्तःप्रदेश के महारत्नों की गवेषणा करने के इच्छुक हों तो महर्षिलोमश प्रणीत [इस “धराचक्र” नामक ग्रन्थ को एक बार अवश्य ही देखिये । इसकी सरल ‘सुबोधिनी’ भाषा टीका को पढ़ने से आपको स्वयं ही इस बात का ज्ञान हो जायगा कि अमुक अमुक जगह पृथिवी के नीचे रत्न, महारत्न आदि हैं । ३=)

जैमिनिसूत्रम्

सोदाहरण—‘विमला’ संस्कृत-हिन्दी टीका द्वयोपेतम् ।

अन्य प्रकाशित संस्करणों में जो कुछ अधूरापन और त्रुटियाँ थीं उन सभी परीक्षोपयोगी विषयों का समावेश प्रस्तुत संस्करण में करा दिया गया है । २।)

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा-संस्कृत-पुस्तकालय, बनारस सिटी । २.....

अस्य ग्रन्थप्रकाशित उद्योगिण्यः—

- १ चापीयत्रिकोणगणितं-विविध-वासना-समलंकृतम् १)
- २ गोलोयरेखागणितम् । परिशिष्ट सहितम् । १)
- ३ चन्द्रकलन-प्रश्नोत्तरविवरणम् । १॥)
- ४ तिथिचिन्तामणिः । 'विजयलक्ष्मी' हिन्दीटीका-उदाहरण सहितः १=)
- ५ ताजिकनीलकण्ठी-गंगाधरमिश्रकृत 'जलदगर्जना' सं. हि. टीकाद्वयोपेत ३॥)
- ६ परबलयक्षेत्रम् । सम्पादक ज्योतिषाचार्य पं० श्रीमुरलीधरठक्कुरः ॥)
- ७ रेखागणितम् । षष्ठाध्याय-परिभाषारूपपत्रमाध्यायसहित ,, १=)
- ८ लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी-सोदाहरण-'सुबोधिनी' सं० हि० टीका ॥)
- ९ प्रतिभावोधकम् । गंगाधरमिश्रकृतार्शतलसंज्ञकतिलकेनाऽलङ्कृतम् ॥)
- १० प्रश्नभूषणम् । विमला-सरला संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेतम् । १=)
- ११ वाजवासना (सोपपत्तिक बीजगणित) सम्पादक ज्यो. आ. गंगाधरमिश्र ॥=)
- १२ बृहज्जातकम् । भट्टोत्पलटीका नवीनगणितोपपत्त्यादि टिप्पणी सहितं २॥)
- १३ बृहज्जातकम् । सोदाहरणोपपत्ति 'विमला' हिन्दी टीका सहित २॥)
- १४ लालावती । पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर कृत नवीनवासना सहिता २॥)
- १५ भावप्रकाशः । अनृतान्वय-भावबोधिनी भाषाटीका प्रश्नपत्र सहित १॥)
- १६ वास्तुरत्नावली-'सुबोधिनी' सं० हि० टीका, परिशिष्ट सहित १॥)
- १७ रेखागणितम् । ११-१२ अध्यायौ श्रीसुधाकरद्विवेदि विरचितं । १)
- १८ शिशुबोधः । विमला भा.टी.।) १९ योगिनोजातकः-'विमला' भा.टी. ३)
- २० शीघ्रबोधः । अनूपमिश्रकृत 'सरला' हिन्दी टीका सहितः १॥)
- २१ सरलत्रिकोणमितिः । म. म. वापुदेव शास्त्रि संकलिता सटिप्पण ३)
- २२ सरलरेखागणितम् । १-२ अध्यायौ विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदि कृतं ॥=)
- २३ सिद्धान्तशिरोमणिः । वासनाभाष्य तथा टिप्पणी सहित सम्पूर्ण ५)
- २४ करणप्रकाशः । श्रीब्रह्मदेवविरचितः । १॥)
- २५ दैवज्ञकामधेनुः । म० म० पं० अनवमशाँसंवराजवरेण सङ्कलितः ४॥)
- २६ चमत्कारचिन्तामणिः । सान्वय-'भावप्रबोधिनी' हिन्दी टीका सहित १=)
- २७ जैमिनिसूत्रम्-सोदाहरण 'विमला' संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेतम् १॥)
- २८ लग्नरत्नाकरः । सान्वय-'शिशुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित १=)
- २९ वास्तुरत्नाकर-श्रीहिवलचक्रयुत । विन्ध्येश्वरीप्रसादकृत हि० टीका १॥)
- ३० जातकपारिजातः । 'सुधाशालिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकाद्वयोपेतः १)

ग्रहलाघवम्

विश्वनाथकृत व्याख्योदाहरणयुत-नूतनोदाहरणोपपत्ति संकलित
माधुरी नामक संस्कृत हिन्दीटीका द्वयोपेतम् ।

आज तक इस ग्रन्थ की कोई भी ऐसी सरल टीका नहीं थी जिससे विद्यार्थी सुकृता पूर्वक ग्रन्थ का आशय समझ कर परीक्षामें पूरी सफलता प्राप्त कर सकें । विश्वनाथी टीका के साथ इसकी माधुरी नामक परीक्षोपयुक्त संस्कृत हिन्दी टीकामें ग्रन्थाशय को अत्यन्त सरल शब्दों में समझाया गया है एवं विश्वनाथी उदाहरण के अतिरिक्त नवीन उदाहरण तथा उपपत्ति भी यथा स्थान दे दी गई है जिससे इस संस्करण का महत्व और भी बढ़ गया है । ३॥)

